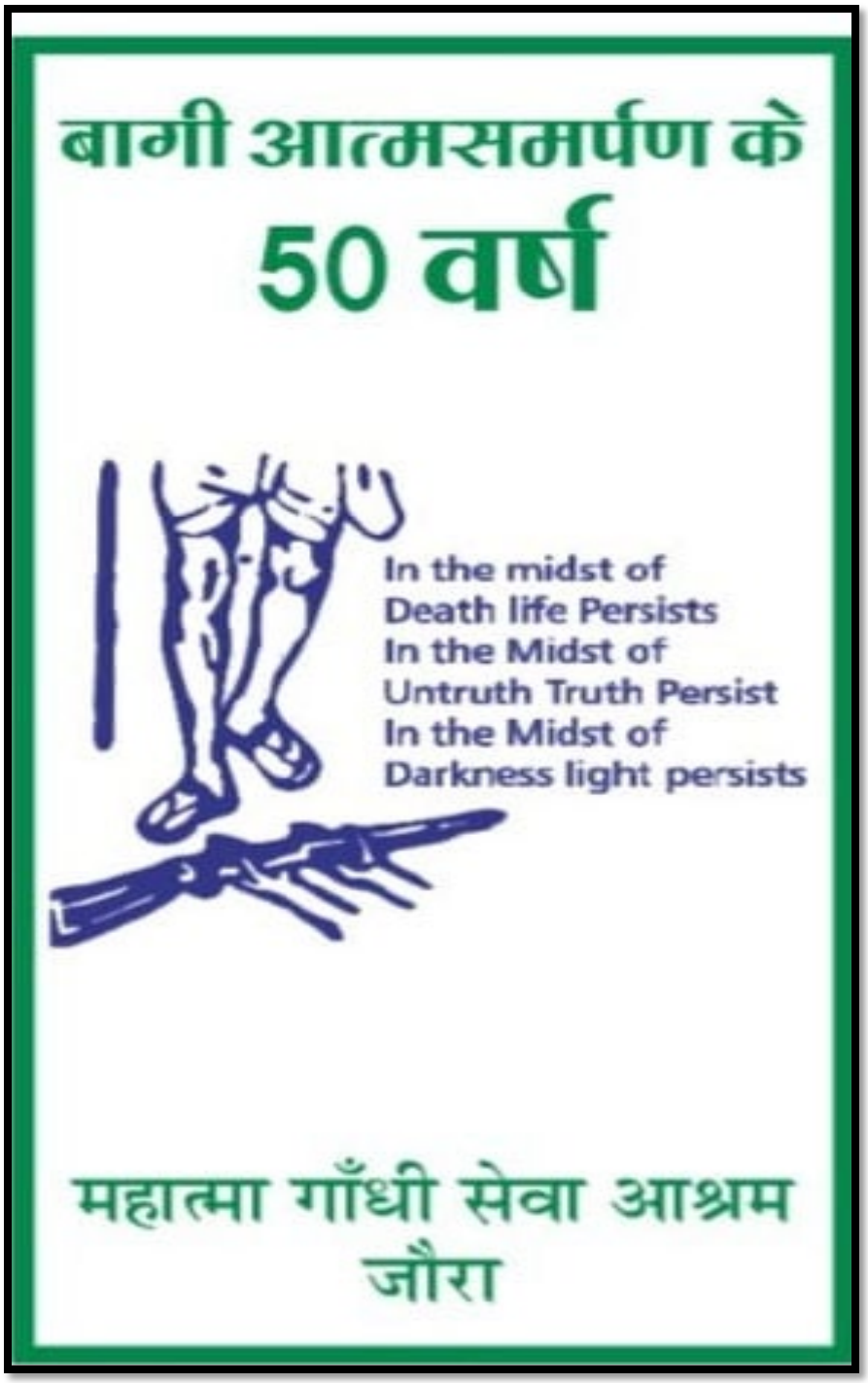

MEDIA REFLECTION ON 50 YEARS OF BAAGI SARENDER…

डकैतों के आत्मसमर्पण का स्वर्ण जयंती समारोह जौरा गांधी आश्रम पर 14 से

नगर संवाददाता ■ ग्वालियर

मध्यप्रदेश में पचास वर्ष पूर्व प्रख्यात समाजसेवी जयप्रकाश नारायण के सामने चंबल के सैकड़ों डकैतों ने अपने हथियार डालकर अहिंसा पर चलने का निश्चय किया था। इसी संदेश को याद करने के लिए 14 अप्रैल से तीन दिन तक डकैतों के समर्पण का स्वर्ण जंयती समारोह मुरैना के जौरा स्थित गांधी आश्रम में आयोजित किया जाएगा। इस मौके पर 30 से ज्यादा पूर्व डकैत, उनके परिजन व गांधीवादी नेता भी जूद रहेंगे। इस अवसर पर कई राज्यों के लगभग एक हजार से ज्यादा युवा शांति व न्याय के लिए आयोजित एक सम्मेलन में हिस्सा लेंगे।

पत्रकारों से चर्चा के दौरान एकता परिषद के राष्ट्रीय संयोजक राजगोपाल पी ने बताया कि 14 अप्रैल 1972 के दिन जौरा के गांधी आश्रम में गांधी के अहिंसा विचारों से प्रेरित होकर चंबल के 300 से ज्यादा डकैतों ने प्रख्यात समाजवादी चिंतक जयप्रकाश नारायण के सामने अपने हथियार डाल दिये थे। उनीं यादों को ताजा करने के लिए 14 से 16 अप्रैल तक जौरा के गांधी आश्रम में डकैत आत्मसमर्पण का स्वर्ण जंयती समारोह आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस समारोह की शुरुआत केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर करेंगे। इस स्वर्ण जंयती समारोह में गांधीवादी विचारों से जुड़े हुए अनेक लोग शामिल होने आएंगे। इसमें जल पुरुष राजेन्द्र सिंह, सुधींद्र कुलकर्णी, वंदना शिवा, निकोलस बार्ला, डॉ. राजेश टंडन, विभो प्रेम आदि प्रमुख हैं।

राजू भाई ने बताया कि इस सम्मेलन के दौरान देश के सभी राज्यों से लगभग 1000 युवा भी आएंगे, जो शांति व न्याय के लिए आयोजित एक सम्मेलन में भाग लेकर अपनी बात सबके सामने रखेंगे। इसके अलावा जिन डकैतों ने 1972 में समर्पण किया था, वे भी इस सम्मेलन में शामिल होंगे और उनको भी इस अवसर पर सम्मानित किया जाएगा। जो पूर्व डकैत अब इस दुनिया में नहीं हैं, उनके परिवार के लोगों को भी इस सम्मेलन में आमंत्रित किया गया है।

कार्यक्रम • महात्मा गांधी सेवा आश्रम में आयोजित कार्यक्रम में 9 बागी जीवन में आए बदलाव का अनुभव करेंगे साझा

बागी आत्मसमर्पण स्वर्ण जयंती समारोह 14 से, आएंगे शांतिदूत

भास्कर संवाददाता | मुरैना

पगारा में 1972 के बागी आत्मसमर्पण के 50 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा में 14 व 15 अप्रैल को स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम में देश-दुनियां के सैकड़ों शांतिदूत अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। 9 बागियों ने भी जौरा आने की सहमति भेजी है।

सोमवार को होटल राधिका पैलेस में आयोजित पत्रकार वार्ता में सर्वोदय समाज के राष्ट्रीय संयोजक व गांधीवादी राजगोपाल पीव्ही, बागी आत्मसमर्पण स्वर्ण जयंती समारोह के आयोजन को लेकर मीडिया से चर्चा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि चंबल घाटी में बागी आत्मसमर्पण की घटना से पूरी दुनिया को शांति व अहिंसा का संदेश प्रसारित हुआ था। चंबल घाटी प्रत्यक्ष हिंसा से तो मुक्त हो गयी किंतु अप्रत्यक्ष हिंसा भूख, गरीबी, अन्याय, अत्याचार और बेरोजगारी से अभी भी मुक्त नहीं हो सकी है। इसके लिए प्रख्यात गांधीवादी डा.एसएन सुब्बाराव के वैचारिक संघर्ष को आगे बढ़ाने की जरूरत है। 14 अप्रैल 1972 को जौरा में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के समक्ष 654 बागी दस्युओं ने अपने हथियार महात्मा गांधी के चित्र के समक्ष डाले थे। इसमें सुब्बाराव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। यह घटना पूरी दुनिया के लिए अहिंसक मूल्यों पर रचनात्मक समाज की स्थापना की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था। कालांतर में इन सभी समर्पित बागियों और पीड़ितों के परिवारों के लिए महात्मा गांधी सेवा आश्रम के द्वारा पुनर्वास का कार्य किया गया। इसलिए बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती के अवसर पर 12 से 16 अप्रैल के बीच राष्ट्रीय युवा नेतृत्व शिविर, 14 अप्रैल को बागी आत्मसमर्पण दिवस और 14 अप्रैल से 16 अप्रैल के बीच अखिल भारतीय सर्वोदय समाज सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

स्वर्ण जयंती समारोह के ये आकर्षण

बागी आत्मसमर्पण स्वर्ण जयंती समारोह में चंदनपाल अध्यक्ष सर्व सेवा संघ, अमरनाथ भाई राष्ट्रीय युवा संगठन, जल पुरूष राजेन्द्र सिंह, पर्यावरणविद डॉ वंदना शिवा, डा. रजनीश अध्यक्ष गांधी दर्शन समिति राजघाट नई दिल्ली, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डा. प्रदीप शर्मा भाग लेंगे। कार्यक्रम में केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, समाजवादी चिंतक मोहन प्रकाश, पूर्व सांसद सदस्य भक्त चरण दास के आने की संभावना है।

आत्मसमर्पित बागी करेंगे गांधी दर्शन पर चर्चा

बागी आत्मसमर्पण दिवस के अवसर पर आत्मसमर्पित बागियों में जीवित बचे बागियों बहादुर सिंह कुशवाहा कमला का पुरा मुरैना, घमंडी सिंह कोटसिरधरामुरैना, अजमेर सिंह यादव कुलैथ ग्वालियर , सोबरन सिंह माधौगढ़ मुरैना,कूट सिंह उर्फ कुटटा गोहटा श्योपुर, पंचम सिंह चौहान, मानसिंह व तिलक सिंह लहार भिण्ड, खरगा कपूरी बाई राजाखेड़ा धौलपुर इस कार्यक्रम में गांधी दर्शन से जीवन में आए बदलाव पर चर्चा करेंगे।

ग्वालियर

बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती 14 से जौरा में

ग्वालियर| बीहड़ और उनमें दस्यु सरगनाओं के लिए पहचाने जाने वाले ग्वालियर चंबल संभाग में इस महीने अनोखा आयोजन होगा। मुरैना के जौरा में स्थित महात्मा गांधी सेवा आश्रम में 14 से 16 अप्रैल तक बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती मनाई जाएगी, जिसमें 30 पूर्व दस्यु सरगना बागी होने से लेकर अन्याय और समर्पण तक की अपनी सच्चाई एक मंच से बताएंगे। ये जानकारी गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता राजगोपाल पीवी ने शनिवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। उन्होंने बताया कि 14 अप्रैल 1972 को लोकनायक जयप्रकाश नारायण, गांधीवादी सुब्बाराव व उनके साथियों के प्रयासों से बागियों का समर्पण शुरू हुआ था और पहला समर्पण माधौसिंह का कराया गया। इस 14 अप्रैल को इस मुहिम के 50 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। राजगोपाल ने बताया कि लोगों को बागियों के जीवन से पूरी तरह परिचित कराया जाएगा, क्योंकि अभी बागियों का सिर्फ एक ही पक्ष लोगों ने जाना है। अतिथियों के तौर पर कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, जलपुरुष राजेंद्र सिंह, राजनीतिक चिंतक सुधींद्र कुलकर्णी, पर्यावरणविद् वंदना शिवा भी शिरकत करेंगी।

स्वर्ण जयंती समारोह जौरा में, देश भर के गांधीवादी कार्यकर्ता होंगे शामिल

बागी आत्मसमर्पण से मिला अहिंसा का संदेश

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मुरैना. चंबल घाटी में हुए बागी आत्मसमर्पण की घटना से पूरी दुनिया को शांति व अहिंसा का संदेश प्रसारित हुआ था। चंबल घाटी प्रत्यक्ष हिंसा से तो मुक्त हो गई, लेकिन अप्रत्यक्ष हिंसा भूख, गरीबी, अन्याय, अत्याचार और बेरोजगारी से अभी भी मुक्त नहीं हो सकी है। उक्त बातें सर्वोदय समाज वे राष्ट्रीय संयोजक व प्रख्यात गांधीवादी राजगोपाल पी.व्ही. ने बागी आत्मसमर्पण घटना के स्वर्ण जयंती समारोह को लेकर आयोजित प्रेस वार्ता में कही।

स्थानीय होटल में चर्चा में राजगोपाल ने बताया कि 14 अप्रेल 1972 को जौरा में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के समक्ष 654 बागी दस्युओं ने अपने हथियार महात्मा गांधी के चित्र के समक्ष डाल दिए। इसमें स्व. डा. एस.एन. सुब्बराव (भाइजी) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह घटना पूरी दुनिया के लिए अहिंसक मूल्यों पर रचनात्मक समाज की स्थापना की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था। कालांतर में इन सभी समर्पित बागियों और पीड़ितों के परिवारों के लिए महात्मा गांधी सेवा आश्रम के द्वारा पुनर्वास का कार्य किया गया।

महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सचिव रनसिंह परमार ने बताया कि पूरी दुनिया में हृदय परिवर्तन का यह एक अनूठा प्रयोग था। भाइजी की इच्छा थी कि बागियों के हृदय परिवर्तन की इस घटना के 50 वर्ष पूरे होने पर इस दिन दुनिया को जौरा से शांति व अहिंसा का चंबल घाटी से प्रचार प्रसार हो। इसलिए बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती के अवसर पर 12 से 16 अप्रेल के बीच राष्ट्रीय युवा नेतृत्व शिविर, 14 अप्रेल को बागी आत्मसमर्पण दिवस और 14 से 16 अप्रेल के बीच अखिल भारतीय सर्वोदय समाज सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

पत्रकारों से चर्चा करते राजगोपाल व रनसिंह परमार

500 युवा आएंगे देश भर से : शिविर में पूरे देशभर के 300 और मध्यप्रदेश के कई जिलों से 200 नवयुवक-नवयुवतियां, एकता परिषद व साथी संगठनों के 500 जमीनी स्तर पर शांति व न्याय के लिए काम कर रहे सामाजिक कार्यकर्ता सहित जाने-माने 200 गांधीवादी वरिष्ठ कार्यकर्ता सहित स्थानीय किसान, मजदूर व व्यापारियों का समूह भाग लेगा। स्थानीय स्तर पर जौरा नगर व करके क्षेत्र के किसानों ने कार्यक्रम के लिए स्वागत समिति का गठन किया है। कुछ जागरूक किसान कार्यक्रम के लिए अन्नदान कर रहे है। अभी तक 25 क्विंटल अनाज आश्रम में आ चुका है।

ये विशिष्ट व्यक्ति आएंगे

कार्यक्रम में आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों में चंदनपाल अध्यक्ष सर्व सेवा संघ, अमरनाथ भाई राष्ट्रीय युवा संगठन, जल पुरुष राजेन्द्र सिंह, पर्यावरणविद् डॉ. वंदना शिवा, डॉ. रजनीश अध्यक्ष गांधी दर्शन समिति राजघाट नई दिल्ली, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ. प्रदीप शर्मा भाग लेंगे। केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व समाजवादी चिंतक मोहन प्रकाश, पूर्व सांसद सदस्य भक्त चरण दास के आने की संभावना है।

बागी आत्मसमर्पण का स्वर्ण जयंती समारोह 14 को

जौरा में बागियों समेत जुटेंगे 1000 लोग

प्रदेश टुडे संवाददाता, ग्वालियर

महामा गांधी के बताये हुऐ रास्ते पर चलकर पूरी दुनिया के सामने अहिंसा का ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत करने वाले चम्बल घाटी के महात्मा गांधी सेवा आश्रम में 14 अप्रैल को बागी समर्पण दिवस की 50वीं वर्षगांठ अयोजित की जा रही है। आज से 50 वर्ष पूर्व डॉ सुब्बराव और राजगोपाल सहित अनेक गांधीवादियों के सफल प्रयास के फल स्वरूप बागियों ने अपने हाथियार डाले और शांति-अहिंसा का मार्ग अपनाया। बागी समर्पण दिवस के ऐतिहासिक 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर अयोजित होने वाले राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ माननीय केन्द्रीय मंत्री डॉ नरेन्द्र सिंह तोमर के द्वारा किया जायेगा। इस अवसर पर एकता परिषद राष्ट्रीय युवा योजना तथा गांधी विचारों से जुड़े अनेक संगठनों के लोग शामिल होगें

राष्ट्रीय सम्मेलन शांति और न्याय जैसे महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा का आयोजन किया जा रहा है। हमारा मानना है कि वर्तमान समय में महात्मा गांधी विनोवा जय प्रकाश और डॉ सुब्बराव के विचारों को लेकर एक व्यापक देशव्यापी अभियान की आवश्यकता है। इस अभियान का व्यापक उद्देश्य समाज के अन्तिम व्यक्ति को न्याय और शांति सुनिश्चित करना होगा इस अभियान में युवा समाज की विशेष भूमिका है। शांति और न्याय के लिए अयोजित इस सम्मलेन में आए देश भर के युवाओं के साथ मिलकर संभावनाओं और सामूहिक प्रयासों की रूप रेखा बनायी जाएगी।

एकता परिषद का मानना है कि देश के वंचित को न्याय और शांति सुनिश्चित करने के लिए सरकार और समाज दोनों को मिलकर सामूहिक प्रयास करना चहिए। इस सम्मेलन में विशेष अतिथि के रूप में जल पुरुष राजेन्द्र सिंह, प्रख्यात राजनीतिक चिंतक सुधींद्र कुलकर्णी प्रख्यात पर्यावरणीय वंदना शिवा राष्ट्रीय आदिवासी मोर्चा के निकोलस बार्ला वरिष्ठ समाजसेवी डॉ राजेश टंडन तथा वनवासी सेवा आश्रम से विभो प्रेम आदि आमंत्रित है इस सम्मेलन में भारत के लगभग सभी प्रांतो से लगभग 1000 लोगों की भागीदारी होगी। शांति और न्याय के लिए आयोजित यह राष्ट्रीय सम्मेलन विख्यात गांधी वादी राजगोपाल के नेतृत्व में महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा, मुरैना में 14 से 16 अप्रैल को अयोजित किया गया है।

● भोपाल, 13 अप्रैल बुधवार 2022

30 राज्यों से 650 नवजवानों के साथ युवा सम्मेलन प्रारंभ

परहित के लिए कार्य करना ही सर्वोदय-गांधीवादी रामधीरज भाई

जौरा/मुरैना अरविन्दो एक्सप्रेस

स्वयं के लिए जीवन जीने की सोच और कार्य से समाज में अन्याय, हिंसा, असमानता जैसी बुराईयां बढ़ती हैं। इसलिए यदि युवा पीढी को बेहतर समाज चाहिए तो परहित के लिए कार्य करना होगा और परहित के लिए सोच और कार्य ही सर्वोदय की परिकल्पना है। उक्त उद्गार प्रख्यात गांधीवादी श्री रामधीरज जी ने जौरा में आयोजित राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर कही।

उन्होने कहा कि जलवायु परिवर्तन का असर आम जन जीवन पर सबसे अधिक है, असमय और अतिवृष्टि, सूखे के कारण खेती किसानी पर निर्भर बहुसंख्यक समाज और गरीब, मजदूरों को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। मानव समाज को चेतने की आवष्यक्ता है, वृक्षारोपण से धरती माता को हरा-भरा और जल संरक्षण व संचयन से पर्यावरण को समृद्व किया जा सकता है।

बागी आत्मसमर्पण के 50वीं वर्षगांठ समारोह के अंतर्गत महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा तथा राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित राष्ट्रीय युवा सम्मेलन का उद्घाटन डा. एस.एन.सुब्बराव के छाया चित्र पर सूत माला अर्पण व दीपप्रज्जवलित कर किया गया। उद्घाटन सत्र में महात्मा गाधी सेवा आश्रम जौरा के अध्यक्ष श्री रनसिंह परमार ने देष भर से आये सभी नवजवानों को स्वागत करते हुए कहा कि नयी पीढ़ी के कंधो पर समाज और राष्ट्र का भार है। हर एक नवजवान को भाई जी के जीवन से प्रेरणा लेकर 'एक घंटा देह को-एक घंटा देष को' पर कार्य करना चाहिए।

राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में त्रिवेन्द्रम से आये सुनिल ने कहा कि बागी आत्मसमर्पण के बारे मे सुना और पढा था किंतु यहां पर आत्मसमर्पित बागी बहादुर सिंह से मिलकर उनके विचारों से अवगत होना मेरे लिए गौरव की बात है। पष्चिम बंगाल से आयी कल्याणी सरकार ने कहा कि भाई जी के जीवन से प्रेरणा लेकर समाज के लिए कुछ कर सकूं तो जीवन धन्य हो जाएगा। राष्ट्रीय युवा योजना के न्यासी केरल के सुकुमारन ने बताया कि युवाओं के साथ जुड़कर समाज परिवर्तन के कार्य से जुड़ने की प्रेरणा भाई जी से मिली थी।

न्याय एवं शांति के लिए युवा विषय पर आयोजित इस पांच दिवसीय युवा सम्मेलन के प्रारंभ में युवा सामाजिक कार्यकर्ता और रायुयो के न्यासी श्री मधुसुदन दास जी ने 'हिंदी है हम करोड़ो-करोड़' नामक सामूहिक गीत का गान किया जिसे सभी भागीदारों ने दोहराया। युवा सम्मेलन में प्रात:काल में योग, सामूहिक श्रम दान और राष्ट्रध्वजारोहण जुड़े कक्षाओं में युवाओं ने बढचढकर हिस्सा लिया। ध्वजारोहण से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी महराष्ट्र से आये नरेन्द्र बडगांवकर ने दी।

बागी आत्मसमर्पण दिवस पर हो रहे सम्मेलन में जवाहर लाल नेहरू के प्रोफेसर आनंद कुमार, प्रख्यात समाजवादी चिंतक व पूर्व सांसद श्री रघु ठाकुर शरीक होंगे और विचारों को प्रस्तुत करेंगे।

गांधी आश्रम के प्रबंधक श्री प्रफुल्ल श्रीवास्ताव ने कहा कि समारोह के भागीदारों के पंजीयन, भोजन, आवास, पण्डाल, सुरक्षा, स्वच्छता इत्यादि से जुड़े सभी कार्यो के लिए जवाबदेह साथियों को जिम्मेवारी दी गयी है। पंजीयन कक्ष में आनंद सोनी, श्यामयादव, भोजन व्यवस्था सुनिल शर्मा, जय सिंह, सुरक्षा व आवास श्री डोंगर शर्मा, संतोष भाई, पानी की व्यवस्था रीतेष बैरागी स्वच्छता व साफ सफाई की व्यवस्था मदुरै से आये श्री अब्दुल भाई, सोषल मीडिया अनीष भाई देख रहे हैं।

बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ समारोह जौरा में चम्बल घाटी की स्मृति से दुनिया को जायेगा शांति का संदेष-राजगोपाल पी.व्ही

(एड दिनेश सिंह सिकरवार)

जौरा, मुरैना। चम्बल घाटी का जौरा हिंसा मुक्ति, प्रतिकार मुक्ति और शोषण मुक्ति के अभियान की जननी रही है। जहां पर 1970 के दषक में बागी आत्मसमर्पण प्रतिकार मुक्ति का पहला कदम था तो आदिवासियों को जागरूक कर उनके भूमि अधिकार की लड़ाई शोषण मुक्ति पर केन्द्रित रहा। इसलिए चम्बल घाटी की स्मृति से दुनिया को शांति का संदेष जायेगा, हिंसा प्रति हिंसा में आगे बढ़ रही इस दुनिया को गांधी के सिद्धांतो की बहुत ही जरूरत है। उक्त उद्गार प्रख्यात गांधीवादी व सर्वोदयी नेता श्री राजगोपाल पी.व्ही (राजू भाई) ने राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के दौरान कही। प्रख्यात गांधीवादी व सर्वोदयी नेता श्री राजगोपाल पी.व्ही (राजू भाई) ने कहा कि दुनिया में गांधीवाद और अणुबम के बीच टकराव हो रहा है। अणुबम के समर्थक और अस्त्र-षस्त्र निर्माता व विक्रेता कम्पनियां गांधीवाद को समाप्त करना चाहती है जिससे कि समाज, देष व दुनिया में हिंसा बढ़े और उनको अपने कारोबार का फायदा मिले। समाज में हिंसा, नफरत, अत्याचार व शोषण करने वालों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है तो दूसरी तरफ अहिंसा, प्रेम, करूणा व भाईचारा पर काम करने वालों की कमी है। महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा के सचिव श्री रनसिंह परमार ने कहा कि चम्बल के बागी आत्मसमर्पण ने दुनिया को संदेष दिया कि गांधीवाद के बल पर हृदयपरिवर्तन से समाज को हिंसामुक्त किया जा सकता है। इसलिए बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर पूरे भारत से युवाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ समारोह मनाया जा रहा है जिससे लोग प्रेरित होकर अपने-अपने क्षेत्रों में प्रेम व भाईचारा पर काम कर सके। बागी आत्मसमर्पण की स्वर्णजयंती समारोह के आकर्षक- सन् 1972 में आश्रम परिसर में लोक नायक जयप्रकाष नारायण के समक्ष हथियार डालकर आत्मसमर्पण करने वाले बागियों में जीवित बचे बहादुर सिंह, अजमेर सिंह, सोबरन सिंह, पंमण्डी, सोनेराम, इत्यादि बागी राजस्थान की कपूरी बाई और उत्तरप्रदेष के बागी और उनके परिजनों के साथ ही साथ बागी समस्या से पीड़ित परिवारों के परिजन भाग लेंगे और उनका स्वागत होगा।

इस अवसर पर चम्बल घाटी की स्मृति से दुनिया को संदेष विषय पर व्याख्यान में केन्द्रीय कृषिमंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री मोहन प्रकाष, समाजवादी पार्टी के नेता श्री रामप्रताप, समाजवादी चिंतक और श्री रघुठाकुर, जवाहर लाल विष्वविद्यालय के प्रोफेसर आनन्द कुमार अपने विचारो को प्रस्तुत करेंगे।

राष्ट्रीय युवा सम्मेलन का दूसरा दिन

बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ समारोह के दौरान आयोजित राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में पूरे देष भर के लगभग 7 सैकड़ा नवजवान भाग ले रहे हैं। सम्मेलन के दूसरे दिन प्रातः योग कक्षा, राष्ट्रध्वजारोहण और श्रमदान के बाद बौद्धिक चर्चा के उपरांत भाषा कक्षा का आयोजन किया गया। इस कक्षा में प्रतिभागी मलयालम, मणिपुरी, तमिल, पंजाबी, गुजराती, बंगाली, आसामी और हिंदी भाषा में आम बोलचाल के कुछ वाक्यों को एक दूसरे से सीखा। पंजाब से आये मनदीप सिंह और फतेह सिंह ने कहा कि यह सम्मेलन अपने आप में उनके लिए अनूठा है जहां कोई भी भेद नहीं है सभी के लिए समान व्यवस्था है, इस तरह के आचरण से ही न्याय की स्थापना हो सकती है। इसी तरह से सिक्किम से आयी मीरा और गीता का मानना है कि युवा सम्मेलन में पूरे भारत के लघु रूप का दर्षन हो रहा है जो उनके लिए प्रेरणादायी है। गुजरात से आये विजय भारतीय ने कहा कि नवजवानों के षिविर में शामिल होकर विचारों के आदान प्रदान से एक सकारात्मक माहौल का निर्माण होगा।

बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ समारोह जौरा में

चम्बल घाटी की स्मृति से दुनिया को जायेगा शांति का संदेश

एक्सल समाचार जौरा/ मुरैना (एड दिनेश सिंह सिकरवार)। चम्बल घाटी का जौरा हिंसा मुक्ति, प्रतिकार मुक्ति और शोषण मुक्ति के अभियान की जननी रही है। जहां पर 1970 के दषक में बागी आत्मसमर्पण प्रतिकार मुक्ति का पहला कदम था तो आदिवासियों को जागरूक कर उनके भूमि अधिकार की लड़ाई शोषण मुक्ति पर केन्द्रित रहा। इसलिए चम्बल घाटी की स्मृति से दुनिया को शांति का संदेष जायेगा, हिंसा प्रति हिंसा में आगे बढ रही इस दुनिया को गांधी के सिद्वांतो की बहुत ही जरूरत है। उक्त उद्गार प्रख्यात गांधीवादी व सर्वोदयी नेता श्री राजगोपाल पी.व्ही (राजू भाई) ने राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के दौरान कही। प्रख्यात गांधीवादी व सर्वोदयी नेता श्री राजगोपाल

पी.व्ही (राजू भाई) ने कहा कि दुनिया में गांधीवाद और अणुबम के बीच टकराव हो रहा है। अणुबम के समर्थक और अस्त्र-षस्त्र निर्माता व विक्रेता कम्पनियां गांधीवाद को समाप्त करना चाहती है जिससे कि समाज, देष व दुनिया में हिंसा बढे और उनको अपने कारोबार का फायदा मिले। समाज में हिंसा, नफरत, अत्याचार व शोषण करने वालों की संख्या में बढोत्तरी हो रही है तो दूसरी तरफ अहिंसा, प्रेम, करूणा व भाईचारा पर काम करने वालों की कमी है। महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा के सचिव श्री रनसिंह परमार ने कहा कि चम्बल के बागी आत्मसमर्पण ने दुनिया को संदेष दिया कि गांधीवाद के बल पर हृदयपरिवर्तन से समाज को हिंसामुक्त किया जा सकता है। इसलिए बागी आत्मसमर्पण की 50वी वर्षगांठ के अवसर पर पूरे भारत से युवाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ समारोह मनाया जा रहा है जिससे लोग प्रेरित होकर अपने-अपने क्षेत्रों में प्रेम व भाईचारा पर काम कर सके। सन् 1972 में आश्रम परिसर में लोक नायक जयप्रकाष नारायण के समक्ष हथियार डालकर आत्मसमर्पण करने वाले बागियों में जीवित बचे बहादुर सिंह, अजमेर सिंह, सोबरन सिंह, घंमण्डी, सोनेराम, इत्यादि बागी राजस्थान की कपूरी बाई और उत्तरप्रदेष के बागी और उनके परिजनों के साथ ही साथ बागी समस्या से पीड़ित परिवारों के परिजन भाग लेंगे और उनका स्वागत होगा।

बागी आत्मसमर्पण की 50वी वर्षगाठ समारोह जौरा मे

चम्बल घाटी की स्मृति से दुनिया को जायेगा शांति का संदेश - राजगोपाल पी.व्ही

- एड दिनेश सिंह सिकरवार

जौरा, मुरैना। चम्बल घाटी का जौरा हिंसा मुक्ति, प्रतिकार मुक्ति और शोषण मुक्ति के अभियान की जननी रही है। जहां पर 1970 के दषक में बागी आत्मसमर्पण प्रतिकार मुक्ति का पहला कदम था तो आदिवासियों को जागरूक कर उनके भूमि अधिकार की लड़ाई शोषण मुक्ति पर केन्द्रित रहा। इसलिए चम्बल घाटी की स्मृति से दुनिया को शांति का संदेष जायेगा, हिंसा प्रति हिंसा में आगे बढ रही इस दुनिया को गांधी के सिद्वांतो की बहुत ही जरूरत है। उक्त उद्गार प्रख्यात गांधीवादी व सर्वोदयी नेता श्री राजगोपाल पी.व्ही (राजू भाई) ने राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के दौरान कही। प्रख्यात गांधीवादी व सर्वोदयी नेता श्री राजगोपाल पी.व्ही (राजू भाई) ने कहा कि दुनिया में गांधीवाद और अणुबम के बीच टकराव हो रहा है। अणुबम के समर्थक और अस्त्र-षस्त्र निर्माता व विक्रेता कम्पनियां गांधीवाद को समाप्त करना चाहती है जिससे कि समाज, देष व दुनिया में हिंसा बढे और उनको अपने कारोबार का फायदा मिले। समाज में हिंसा, नफरत, अत्याचार व शोषण करने वालों की संख्या में बढोत्तरी हो रही है तो दूसरी तरफ अहिंसा, प्रेम, करूणा व भाईचारा पर काम करने वालों की कमी है। महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा के सचिव श्री रनसिंह परमार ने कहा कि चम्बल के बागी आत्मसमर्पण ने दुनिया को संदेष दिया कि गांधीवाद के बल पर हृदयपरिवर्तन से समाज को हिंसामुक्त किया जा सकता है। इसलिए बागी आत्मसमर्पण की 50वी वर्षगांठ के अवसर पर पूरे भारत से युवाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ समारोह मनाया जा रहा है जिससे लोग प्रेरित होकर अपने-अपने क्षेत्रों में प्रेम व भाईचारा पर काम कर सके।

बागी आत्मसमर्पण की स्वर्णजयंती समारोह के आकर्षक - सन् 1972 में आश्रम परिसर में लोक नायक जयप्रकाष नारायण के समक्ष हथियार डालकर आत्मसमर्पण करने वाले बागियों में जीवित बचे बहादुर सिंह, अजमेर सिंह, सोबरन सिंह, घंमण्डी, सोनेराम, इत्यादि बागी राजस्थान की कपूरी बाई और उत्तरप्रदेष के बागी और उनके परिजनों के साथ ही साथ बागी समस्या से पीड़ित परिवारों के परिजन भाग लेंगे और उनका स्वागत होगा। इस अवसर पर चम्बल घाटी की स्मृति से दुनिया को संदेष विषय पर व्याख्यान में केन्द्रीय कृषिमंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री मोहन प्रकाष, समाजवादी पार्टी के नेता श्री रामप्रताप, समाजवादी चिंतक और श्री रघुठाकुर, जवाहर लाल विष्वविद्यालय के प्रोफेसर आनन्द कुमार अपने विचारो को प्रस्तुत करेंगे।

राष्ट्रीय युवा सम्मेलन का दूसरा दिन - बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ समारोह के दौरान आयोजित राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में पूरे देष भर के लगभग 7 सैकडा नवजवान भाग ले रहे हैं। सम्मेलन के दूसरे दिन प्रातः योग कक्षा, राष्ट्रध्वजारोहण और श्रमदान के बाद बौद्विक चर्चा के उपरांत भाषा कक्षा का आयोजन किया गया। इस कक्षा में प्रतिभागी मलयालम, मणिपुरी, तमिल, पंजाबी, गुजराती, बंगाली, आसामी और हिंदी भाषा में आम बोलचाल के कुछ वाक्यों को एक दूसरे से सीखा। पंजाब से आये मनदीप सिंह और फतेह सिंह ने कहा कि यह सम्मेलन अपने आप में उनके लिए अनूठा हैं जहां कोई भी भेद नहीं है सभी के लिए समान व्यवस्था है, इस तरह के आचरण से ही न्याय की स्थापना हो सकती है। इसी तरह से सिक्किम से आयी मीरा और गीता का मानना है कि युवा सम्मेलन में पूरे भारत के लघु रूप का दर्षन हो रहा है जो उनके लिए प्रेरणादायी है। गुजरात से आये विजय भारतीय ने कहा कि नवजवानों के षिविर में शामिल होकर विचारों के आदान प्रदान से एक सकारात्मक माहौल का निर्माण होगा

आयोजन वागी समर्पण स्वर्ण जयंती समारोह कार्यक्रम, युवा सम्मेलन में देशभर से युवकों का आना शुरू

स्वाभिमान पर आधारित शोषण मुक्त समाज की रचना जरूरी: रामधीरज भाई

जौरा(नईदुनिया न्यूज)। चंबल में हुए डकैतों के आत्मसमर्पण से सामाजिक सम्मान की प्राप्ति और शोषण मुक्त समाज की रचना का संदेश पूरी दुनिया में गया था। 654 वागियों ने अच्छी दुनिया को बनाने के लिए अपनी बंदूकें गांधी की प्रतिमा के समक्ष समर्पित कर दीथी।

उक्त उद्गार जौरा में वागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह में जौरा गांधी आश्रम में आयोजित कार्यक्रम में सर्वोदय मंडल उत्तरप्रदेश के अध्यक्ष और प्रख्यात गांधीवादी रामधीरज भाई ने व्यक्त किए। रामधीरज भाई ने कहा कि खेती-किसानी को प्राथमिक सेक्टर बनाना चाहिए, लेकिन दुर्भाग्य से पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत उद्योग धंधों को प्राथमिकता दी जा रही है।

कार्यक्रम में मौजूद अतिथि। ● नईदुनिया

उन्होंने कहा कि खेती किसानी ही एक ऐसा उद्यम है, जहां पर एक बीज से सैकड़ों अनाज या फल उगते है, अन्यथा उद्योग धंधों में जितना कच्चा माल होता है। उतना ही अथवा उससे कम उत्पादन होता है। खेती किसानी से देश की बहुसंख्यक आबादी जुड़ी हुई है।इस दौरान कार्यक्रम में बताया गया कि कि 14 अप्रैल 1972 को जौरा में हुए वागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा में 14 अप्रैल को मनाया जा रहा है। इस समारोह में राष्ट्रीय युवा सम्मेलन भी आयोजित किया जा रहा है। राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में भागीदारी के लिए देश भर से नौजवानों को पहुंचना प्रारंभ हो चुका है। सिक्किम, हिमांचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, केरल, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, तेलंगाना और उड़ीसा के प्रतिभागी पहुंच चुके हैं। राष्ट्रीय युवा एकता शिविर का उद्घाटन कल सर्वोदय मंडल उत्तरप्रदेश के अध्यक्ष रामधीरज भाई, एकता परिषद के संस्थापक और गांधी आश्रम के अध्यक्ष राजगोपाल पीव्ही करेंगे। आश्रम के प्रबंधक प्रफुल्ल श्रीवास्तव ने बताया कि समारोह में भाग लेने के लिए बिहार के सामाजिक कार्यकर्ता प्रदीप प्रियदर्शी, उत्तरप्रदेश से अविंद कुशवाह, अनिल भाई, दिल्ली से धर्मेन्द्र, केरल से अनिल सुकुमारन, उड़ीसा से मधु भाई और तेलंगाना से के यादव राजु, महाराष्ट्र के नरेन्द्र वडगांवकर व एकता परिषद के संतोष सिंह, अभीष कुमार केके, डॉगर शर्मा तथा छत्तीसगढ के रमेश शर्मा पहुंच चुके हैं।

आत्मसमर्पित वागी अजमेर सिंह, बहादुर सिंह और सोनेराम गौड रहे मौजूद:सम्मेलन में भागीदार बनने के लिए पूर्व वागी आत्मसमर्पित अजमेर सिंह, बहादुर सिंह और सोनेराम गौड भी आश्रम में आ चुके है। ज्ञात हो कि अजमेर सिंह चंबल के दुर्दात वागी मोहर सिंह व सोनेराम गौड, वागी माधो सिंह तथा बहादुर सिंह, वागी हरविलास सिंह के गिरोह के सदस्य रहे। जिन्होंने आत्मसर्पण कर आम नागरिकों की तरह जीवन जी रहे है। इस पूरे आयोजन में पूर्व वागी भी मौजूद रहेंगे। जिसमें अजमेर सिंह, बहादुर सिंह व सोनेराम गौड आश्रम पर पहुंच चुके है। इस दौरान देश व विदेश से भी लोग इस आयोजन में शिरकत करेंगे।

परहित के लिए कार्य करना ही सर्वोदय : रामधीरज भाई

सम्मेलन में शामिल युवा।

पत्रिका ऑन द स्पॉट

30 राज्यों से 650 नौजवानों के साथ युवा सम्मेलन प्रारंभ

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

जौरा/मुरैना. स्वयं के लिए जीवन जीने की सोच और कार्य से समाज में अन्याय, हिंसा, असमानता जैसी बुराईयां बढ़ती हैं। युवा पीढ़ी को बेहतर समाज चाहिए तो परहित के लिए कार्य करना होगा और परहित के लिए सोच और कार्य ही सर्वोदय की परिकल्पना है। प्रख्यात गांधीवादी रामधीरज भाई ने गांधी आश्रम जौरा में आयोजित राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में यह बात कही।

जलवायु परिवर्तन पर चर्चा में उन्होंने कहा कि इसका असर आम जन जीवन पर सबसे अधिक है, असमय और अतिवृष्टि, सूखे के कारण खेती किसानी पर निर्भर बहुसंख्यक समाज और गरीब, मजदूरों को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। मानव समाज को चेतने की आवश्यक्ता है, वृक्षारोपण से धरती माता को हरा-भरा और जल संरक्षण व संचयन से पर्यावरण को समृद्व किया जा सकता है।

बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ समारोह के अंतर्गत महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा तथा राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित राष्ट्रीय युवा सम्मेलन का उद्घाटन गांधीवादी विचारक डॉ. एसएन सुब्बराव के छाया चित्र पर सूत माला अर्पण व दीपप्रज्जवलित कर किया गया। उद्घाटन सत्र में आश्रम जौरा के अध्यक्ष रनसिंह परमार ने कहा कि नयी पीढ़ी के कंधो पर समाज और राष्ट्र का भार है। हर एक नौजवान को भाईजी के जीवन से प्रेरणा लेकर 'एक घंटा देह को-एक घंटा देश को' सिद्धांत पर कार्य करना चाहिए।

■ वर्ष-01 अंक-169 कुल पृष्ठ-8 मुरैना, शुक्रवार 15 अप्रैल 2022 मूल्य₹ 1.00 Email- ›› editorajaysahara@gmail.com

अपमान, विरोध, उपहास के बाद भी गांधी ने सत्यधर्म नहीं छोड़ा : केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर

बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ समारोह शुभारंभ

शांति व अहिंसा की ताकत बंदूक में नहीं- कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर

चम्बल में न्याय और शांति के लिए शिक्षा और रोजगार की प्राथमिकता हो-समाजवादी चिंतक रघु ठाकुर

दंगा-फसाद मिटाने का रास्ता गांधीवाद में-प्रोफेसर आनंद कुमार

अजय सहारा। मुरैना

तमाम अपमान, विरोध और उपहास के बाद भी गांधी जी ने जीवन में सत्यधर्म का पालन किया और सत्यधर्म नहीं छोड़ा। भौतिक शरीर से बहुत सारे काम किये जाते हैं। इसके साथ एक आत्मिक ताकत होती है और यही आध्यात्मिक ताकत व्यक्ति को सर्वमान्य और महान बनाती है। उनके शिष्य जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में चम्बल में बागी आत्मसमर्पण का होना प्रेरणादायक घटना है और इसमें भाई जी डा.एस.एन. सुब्बराव का कार्य बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा। उक्त उद्गार बागी आत्मसमर्पण समारोह में मुख्य अतिथि बतौर केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने जौरा में गांधी सेवा आश्रम में गुरूवार को व्यक्त किये। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर को याद करते हुए कहा कि तमाम सामाजिक बुराईयां, जातिगत भेदभाव को सहने के बाद भी डा. अम्बेडकर ने निष्पक्षता के साथ बिना किसी पूर्वाग्रह के पूरे देश को संचालित करने के लिए संविधान लिखा। उनके जीवन से महान कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। इस अवसर पर जौरा विधायक श्री सूबेदार सिंह रजौधा, भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ योगेश पाल गुप्ता, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गीता हर्षाना, श्री अनिल, श्री केदार सिंह जी, श्री मुंशी लाल जी, कलेक्टर श्री बी कार्तिकेयन, पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष बागरी, सीईओ जिला पंचायत श्री रोशन कुमार सिंह, एसडीएम सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि चम्बल के भिंड और मुरैना की पहचान बागीयों और उनके कार्यों से नकारात्मक रहा है। चम्बल की अच्छाईयों को रेखांकित करते हुए उन्होने कहा कि चम्बल में ककनमठ और मितावली के साथ डाल्फिन, घडियाल पार्क और खेत-खलिहान भी हैं। उन्होंने जिला प्रशासन से देशभर से आये नौजवानों को चम्बल विशेषकर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल संग्रहालय का भ्रमण कराने की व्यवस्था करने के लिए भी कहा, जिससे नौजवान चम्बल की सकारात्मक छवि को लेकर देश के कोने-कोने में जायेंगे।

प्रख्यात गांधीवादी और एकता परिषद के संस्थापक श्री राजगोपाल पी.व्ही ने सभी आगन्तुकों का स्वागत करते हुए कहा कि चम्बल की घटना से देश व दुनिया में शांति व अहिंसा का संदेश गया। चम्बल की स्मृति से दुनिया को अहिंसा का संदेश जाना चाहिए।

समाजवादी चिंतक और पूर्व सांसद श्री रघु ठाकुर ने कहा कि न्याय व शांति के लिए गांधी के तीन सूत्र 'चलो शहर से गांव की ओर', 'बडे से छोटे की ओर' तथा 'मशीन से हाथ की ओर' पर काम करने की आवश्यक्ता है। चम्बल में शिक्षा और रोजगार पर काम करना न्याय व शांति के लिए जरूरी है।

प्रख्यात समाजशास्त्री, अध्येता व जवाहर लाल विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर आनंद कुमार ने कहा कि साम्प्रदायिक एकता के हजार सूत्र देने वाले शंकराचार्यो, मौलवियों और राजनेताओं के होने के बाद भी रामनवमी, होली और ईद के दिन देश में दंगा-फसाद होना चिंता का विषय है। इसे जड़ से मिटाने का रास्ता केवल गांधीवाद में है। गांधी का रास्ता है-तीज त्योहार में अपने-अपने

टोल-मुहल्ले में जाकर एक दूसरे को बधाइंया देना और भाईचारा बढाना है। उन्होने कहा कि दंगा फसाद संसद और विधानसभा में नहीं होता बल्कि टोले और मुहल्ले में होता है। इसलिए उसका रास्ता भी वहीं है।

सांसद डा विकास महात्मने ने अपने उद्बोधन में देश के राजनैतिक परिदृष्य में पारदर्शिता लाने के लिए चुनाव प्रक्रिया एवं प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यक्ता पर बल दिया।

समाजवादी चिंतक श्री रामप्रताप ने कहा कि चम्बल का विकास पर्यावरणीय पर्यटन, शिक्षा एवं स्वावलम्बन पर ही निर्भर, जिसमें युवाओं की सक्रिय भागीदारी करानी होगी। कार्यक्रम के दौरान विलेज इण्डिया एवं जय जगत के अंतराष्ट्रीय प्रतिनिधियों क्रमशः सुश्री एस्टर (इग्लैण्ड) व श्रीमती जिलकार हैरिस (कनाडा) ने भी अपने विचार व्यक्त कर शांति संदेश दिया।

ड्रोन कैमरे के नीचे आने से बाल- था। ड्रोन के ऑपरेटर ने पुराने बस

चंबल में बागी समर्पण की 50वीं वर्षगांठ: समाजवादी चिंतक ठाकुर, जेएनयू के प्रो. कुमार ने भी की शिरकत

शांति और अहिंसा की ताकत बंदूक में नहीं

पत्रिका न्यूज पंच

मुरैना/जौरा. शांति और अहिंसा की ताकत बंदूक में नहीं है। महात्मा गांधी ने तमाम अपमान, विरोध और उपहास सहने के बाद भी सत्यधर्म नहीं छोड़ा। भौतिक शरीर से बहुत से कार्य किए जाते हैं, इनमें आत्मिक ताकत होती है और यही ताकत व्यक्ति को सर्वमान्य और महान बनाती है। केंद्रीय किसान कल्याण और कृषि विकास मंत्री तोमर ने गुरुवार को बागी समर्पण की 50वीं वर्षगांठ के सिलसिले में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बोलते हुए यह बातें कहीं।

उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी के शिष्य जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चंबल में बागी आत्मसमर्पण का घटनाक्रम प्रेरणादायक है। इसमें डॉ. एसएन सुब्बाराव भाईजी का महत्वपूर्ण योगदान है। एकता परिषद के संस्थापक व गांधीवादी राजगोपाल पीवी ने कहा कि चंबल में बड़े पैमाने पर बागी समर्पण की घटना से देश व दुनिया में शांति व अहिंसा का संदेश गया। चंबल की स्मृति से भी दुनिया को अहिंसा का संदेश जाना चाहिए। तोमर ने डॉ. भाईजी की समाधि स्थल पर पुष्पांजलि देकर आश्रम परिसर में उनकी प्रतिमा का अनावरण किया।

गांधी सेवाश्रम में समर्पिब बागियों के साथ केंद्रीय मंत्री।

भाईजी संस्कार पुरस्कार 2022

डॉ. एसएन सुब्बराव (भाईजी) के नाम से सामाजिक कार्य के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार आंध्रप्रदेश के के यादव राजू, तमिलनाडु के करुनाकरण और महाराष्ट्र के नरेन्द्र बडगांवकर को प्रदान किया गया। इसमें उनको स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्रम सहित संयुक्त रूप से एक लाख की धनराशि दी गई।

समर्पित बागियों को मंच से मिला सम्मान

70 के दशक के बागी सरगना सरू सिंह, माधो सिंह, मोहर सिंह, माखन-छिद्दा, हरविलास सिंह व राजस्थान के रामसिंह गिरोह के सदस्य रहे आत्मसमर्पित बागी मानसिंह, मेहरबान सिंह, गंगा सिंह, संतोष सिंह, उम्मेद सिंह, रामभरोसी, घमंडी सिंह, बूटा सिंह, अजमेर सिंह यादव, बहादुर सिंह कुशवाहा, सोबरन सिंह, सोनेराम, रामस्वरूप सिकरवार, तथा 80 के दशक के आत्मसमर्पित दस्यु रमेश सिंह सिकरवार, बाबू सिंह, प्रभु सिंह और राजस्थान आत्मसमर्पित महिला बागी कपूरी बाई समारोह में शामिल हुए। सभी आत्मसमर्पित बागियों को सम्मानित किया गया।

इन्होंने भी किया संबोधित

- समाजवादी चिंतक और पूर्व सांसद रघु ठाकुर ने कहा कि न्याय व शांति के लिए गांधी के तीन सूत्र 'चलो शहर से गांव की ओर', 'बड़े से छोटे की ओर' तथा 'मशीन से हाथ की ओर', पर काम करने की आवश्यकता है। चंबल में शिक्षा और रोजगार पर काम करना न्याय व शांति के लिए जरूरी है।
- जवाहर लाल विश्वविद्यालय के पूर्व प्रो. आनंद कुमार ने कहा कि सांप्रदायिक एकता के हजार सूत्र देने वाले शंकराचार्यों, मौलवियों और राजनेताओं के होने के बाद भी रामनवमी, होली और ईद के दिन देश में दंगा-फसाद होना चिंता का विषय है। इसे जड़ से मिटाने का रास्ता केवल गांधीवाद में है।
- सांसद डॉ. विकास महात्मने ने देश के राजनीतिक परिदृश्य में पारदर्शिता लाने के लिए चुनाव प्रक्रिया एवं प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यक्ता पर बल दिया।
- समाजवादी चिंतक रामप्रताप ने कहा कि चंबल का विकास पर्यावरणीय पर्यटन, शिक्षा एवं स्वावलम्बन पर ही निर्भर है। इसमें युवाओं की सक्रिय भागीदारी करानी होगी। कार्यक्रम एक्शन विलेज इण्डिया एवं जय जगत के अंतराष्ट्रीय प्रतिनिधियों एस्टर (इग्लैण्ड) व जिल कार हैरिस (कनाडा) ने भी विचार व्यक्त किए।

क्या था चंबल में बागी आत्मसमर्पण का स्वरूप

वर्ष 1970 में 14 अप्रैल को लोक नायक जयप्रकाश नारायण के समक्ष चंबल के कुख्यात बागियों ने गांधीजी के चित्र के समक्ष जौरा स्थित पुराने गांधी आश्रम में अपने हथियार डालकर समर्पण कर किया था। उनके समर्पण और पुनर्वास में डॉ. एसएन सुब्बराव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बागी आत्मसमर्पण के 50 वर्ष पूरे होने पर महात्मा गांधी सेवा आश्रम व एकता परिषद ने वर्षगांठ का आयोजन किया। संचालन आश्रम के सचिव रनसिंह परमार, रमेश शर्मा और राकेश दीक्षित ने संयुक्त रूप से किया। सम्मेलन में मैग्सेसे एवार्डी जलपुरुष राजेन्द्र सिंह, इलाहाबाद विवि के प्रो. प्रदीप शर्मा, पत्रकार जयंत तोमर, सर्वोदय मंडल उत्तरप्रदेश के रामधीरज भाई, राष्ट्रीय युवा योजना के न्यासी सुकुमारन, मधुभाई, श्योपुर के जयसिंह, कैलाश पाराशर, एकता परिषद के महासचिव अनीश कुमार, सर्वोदय समाज परिषद के मनीष राजपूत, बिहार के सामाजिक कार्यकर्ता प्रदीप प्रियदर्शी, गांधी स्मृति दर्शन के रजनीश, अरुणाचल के हरिविश्वास, बिहार के मुकेश, त्रिपुरा के देवाशीष, इण्डोनेशिया से गांधीवादी और पद्मश्री से सम्मानित इन्दिरा उद्यन उपस्थित रहे।

दस्यु आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती • देशभर से जुटे शांतिदूत, सुब्बाराव भाईजी की प्रतिमा का अनावरण

हिंसा से अहिंसा की ओर... उम्र 75 पार, हाथों में बंदूकें, मंच से बोले- शांति व अहिंसा ही जीवन का अंतिम सत्य

जो शक्ति शांति व अहिंसा में है, वह बंदूक में नहीं: केंद्रीय मंत्री तोमर

भास्कर संवाददाता | मुरैना/जौरा

उम्र 75 वर्ष के पार। हाथ-पैरों में फुर्ती भले ही न हो लेकिन आंखों में जबरदस्त आत्मविश्वास व हाथों में बंदूकें। गांधी सेवा आश्रम में 1972 के दस्यु आत्मसमर्पण के स्वर्ण जयंती समारोह में आए पूर्व बागी कुछ ऐसे ही नजर आ रहे थे। तीन दिवसीय समारोह के पहले दिन 1972 से 1980 के बीच हथियार डालकर समाज की मुख्यधारा में जुड़े पूर्व बागी जुटे थे। 22 बागी व उनके परिजन के सम्मान के लिए मंच पर देशभर से जुटे प्रख्यात समाजसेवियों, गांधीवादी, चिंतक, विचारकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया तो बागियों के हर्ष का ठिकाना न रहा। मंच से बागियों ने कहा कि हमने मजबूरी में बगावत का रास्ता अख्तियार किया लेकिन सरेंडर करने के बाद जब लौटकर सामान्य व्यक्तियों की तरह जीवन जीकर देखा तब समझ आया कि शांति व अहिंसा ही जीवन का अंतिम सत्य। समारोह में समाजसेवी रनसिंह परमार, रमेश शर्मा, राकेश दीक्षित, मैग्सेसे अवार्डी जलपुरुष राजेंद्र सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर प्रदीप शर्मा, समाजवादी जयंत तोमर, सर्वोदय मंडल यूपी के रामधीरज भाई, राष्ट्रीय युवा योजना के न्यासी सुकुमारन, मधुभाई, श्योपुर के जयसिंह, कैलाश पाराशर, बिहार के सामाजिक कार्यकर्ता प्रदीप प्रियदर्शी, गांधी स्मृति दर्शन के रजनीश, अरुणाचल प्रदेश के हरिविलास, बिहार के मुकेश, त्रिपुरा के देवाशीश, इंडोनेशिया से आए प्रख्यात गांधीवादी और पद्मश्री से सम्मानित इंदिरा उद्यन भी मौजूद रहे।

1972 में महान गांधीवादी के सामने हथियार डालने वाले 22 बागियों और उनके परिजन का किया सम्मान

इनकी बंदूकों से कांपते थे चंबल के बीहड़, आज अहिंसा के दूत बनकर मंच पर पहुंचे।

इन 22 बागियों व उनके परिजन का सम्मान

समारोह में 70 के दशक में चंबल को थर्राने वाले सरगना सरू सिंह, माधौसिंह, मोहर सिंह, माखन-छिद्दा, हरिविलास सिंह, राजस्थान के रामसिंह गिरोह के आत्मसमर्पित बागी मानसिंह, मेहरबान सिंह, गंगा सिंह, संतोष सिंह, उम्मेद सिंह, रामभरोसी, घमंडी सिंह, बूटा सिंह, अजमेर सिंह यादव, बहादुर सिंह कुशवाह, सोबरन सिंह, सोनेराम, रामस्वरूप सिकरवार, 80 के दशक के आत्मसमर्पित दस्यु रमेश सिंह सिकरवार, बाबू सिंह, प्रभु सिंह और राजस्थान की आत्मसमर्पित महिला बागी कपूरी बाई को सम्मानित किया गया। इनमें से कुछ दस्यु का देहांत हो चुका है और कुछ समारोह में नहीं आ सके, ऐसे में उनके परिजन का सम्मान किया गया।

प्रतिमा का अनावरण, केके यादव, करुणाकरण व नरेंद्र को मिला भाई संस्कार पुरस्कार

महान गांधीवादी विचारक व चंबल के बागियों को सरेंडर कराकर समाज की मुख्यधारा में जोड़ने वाले डॉ. एसएन सुब्बाराव की प्रतिमा का गुरुवार को गांधी सेवा आश्रम में अनावरण किया गया। केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने प्रतिमा का अनावरण कर उनकी समाधि स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित की। वही वर्ष 2022 का भाईजी संस्कार पुरस्कार सामाजिक कार्यकर्ता केके यादव राजू (आंध्रप्रदेश), के करुनाकरण (तमिलनाडु) और नरेंद्र बडगांवकर (महाराष्ट्र) को दिया गया। यहां बता दें कि सुब्बाराव की स्मृति में यह पुरस्कार समारोह इसी वर्ष से शुरू किया गया है, जिसमें पुरस्कार के रूप में एक लाख की धनराशि, स्मृति चिह्न व अंगवस्त्र दिए गए।

चंबल ने दुनिया को दिया शांति और अहिंसा का संदेश: राजूभाई

1972 में जौरा की पावन भूमि पर 600 बागियों ने हथियार डालकर पूरी दुनिया को शांति-अहिंसा का संदेश दिया। समाजवादी चिंतक रघु ठाकुर ने कहा कि न्याय व शांति के लिए गांधी के तीन सूत्र 'चलो शहर से गांव की ओर', 'बड़े से छोटे की ओर' तथा 'मशीन से हाथ की ओर' पर काम करने की जरूरत है। प्रख्यात समाजसेवी जेएनयू के पूर्व प्रोफेसर आनंद कुमार ने कहा कि सांप्रदायिक एकता के लिए हजार सूत्र देने वाले शंकराचार्यों, मौलवियों और राजनेताओं के होने के बाद भी रामनवमी, होली और ईद के दिन देश में दंगा-फसाद होना चिंता का विषय है, इसे जड़ से मिटाने का रास्ता केवल गांधीवाद में है। आयोजन में सांसद डॉ. विकास महात्मने, समाजवादी चिंतक रामप्रताप, एक्शन विलेज इंडिया एवं जय जगत की अंतराष्ट्रीय प्रतिनिधि सुश्री एस्टर (इंग्लैंड), जिल कार हैरिस (कनाडा) ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

अपमान, विरोध, उपहास के बाद भी गांधी ने सत्यधर्म नहीं छोड़ा: तोमर

गांधी सेवा आश्रम में आयोजित समारोह में पहुंचे केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि तमाम अपमान, विरोध और उपहास के बाद भी गांधी जी ने जीवन में सत्यधर्म नहीं छोड़ा। उनके शिष्य जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चंबल में बागी आत्मसमर्पण का होना प्रेरणादायक घटना है। इसमें भाई जी (सुब्बाराव) का काम बहुत महत्वपूर्ण रहा।

जौरा में दस्यु आत्मसमर्पण स्वर्ण जयंती समारोह

22 बागी व उनके परिजन का सम्मान डॉ. सुब्बाराव की प्रतिमा का अनावरण

जौरा (मुरैना)| जौरा के गांधी सेवा आश्रम में 1972 के दस्यु आत्मसमर्पण के स्वर्ण जयंती समारोह की गुरुवार से शुरूआत हो गई। तीन दिवसीय समारोह के पहले दिन 1972 से 1980 के बीच हथियार डालने वाले 22 बागी व उनके परिजन पहुंचे। जिनका सम्मान किया गया। केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने चंबल के बागियों को सरेंडर कराकर समाज की मुख्यधारा में जोड़ने वाले डॉ. एसएन सुब्बाराव की प्रतिमा का अनावरण किया। वहीं वर्ष 2022 का भाईजी संस्कार पुरस्कार सामाजिक कार्यकर्ता केके यादव राजू (आंध्रप्रदेश), के करूनाकरण (तमिलनाडु) और नरेंद्र बडगांवकर (महाराष्ट्र) को दिया गया। यहां बता दें कि सुब्बाराव की स्मृति में यह पुरस्कार समारोह इसी वर्ष से शुरू किया गया है। इसमें पुरस्कार के रूप में एक लाख की धनराशि, स्मृति चिह्न व अंगवस्त्र दिए गए।

(दबंगों ने जमीन कब्जाई तो... पढ़ें | पेज 7)

जौरा में बागी आत्मसमर्पण की 50 वीं वर्षगांठ पर तीन दिवसीय समारोह का शुभारंभ

चंबल घाटी से दुनिया में जा रहा शांति का संदेश : तोमर

- हिंसा प्रतिहिंसा से आगे बढ़ रही इस दुनिया को गांधी के सिद्धांतों की आवश्यकता
- 30 राज्यों से 600 से ज्यादा गांधीवादी आए

मुरैना। चंबल के सबसे बड़े बागी आत्मसमर्पण के 50 साल पूरे होने पर जिले के जौरा कस्बे में तीन दिवसीय समारोह का आयोजन किया जा रहा है। महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा के मैदान पर 14 अप्रैल को 1972 को चंबल के 500 से अधिक उन नामी गिरामी बागियों ने हथियार डाले थे जिनके नाम से दुनिया थर्राती थी। समारोह के पहले दिन शुभारंभ अवसर पर केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने बागी आत्मसमर्पण को याद करते हुए कहा कि इस जौरा के गांधी आश्रम में 1970 के दशक में बागी आत्मसमर्पण प्रतिकार मुक्ति का पहला कदम था। वहीं आदिवासियों को जागरूक कर उनके भूमि अधिकार की लड़ाई, शोषण मुक्ति का केंद्र भी रहा है। इसलिए चंबल घाटी की स्मृति से दुनिया को शांति का संदेश जा रहा है। हिंसा प्रतिहिंसा से आगे बढ़ रही इस दुनिया को गांधी के सिद्धांतों की अति आवश्यकता भी है, जिसे स्वर्गीय सुबाराव जी के बाद अब पीवी राजगोपालन राजू भाई एवं उनके गांधी आश्रम के समस्त साथीगण अहिंसात्मक ढंग से आगे बढ़ा रहे हैं । उन्होंने कहा कि गांधीवादी देश के कोने-कोने में अहिंसात्मक तरीके से शांति स्थापित करा रहे हैं एवं अहिंसा के विचार के साथ सद्भावना का वातावरण बना रहे हैं। तोमर ने कहा कि आज का दिन निश्चित रूप से बेहद महत्वपूर्ण दिन है। आज बागियों का समर्पण दिवस है और बाबा साहब अंबेडकर की जयंती है। भगवान महावीर का जन्मदिन है एवं बैसाखी का त्योहार भी है। गांधी सेवा आश्रम में 30 राज्यों से 600 से ज्यादा गांधीवादी लोगों एवं स्थानीय समाजसेवियों को संबोधित करते हुए केन्द्रीय मंत्री तोमर ने कहा कि राजा जी जब बोल रहे थे, तो वे बेहद भावुक हो गए। बरसों बाद स्वर्गीय भाई जी सुब्बाराव जी की अनुपस्थिति में यह कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। कार्यक्रम में अल्पसंख्यक वित्त विकास निगम के अध्यक्ष रघुराज सिह कंषाना, ऊर्जा विकास निगम के अध्यक्ष गिर्राज दण्डोतिया, डा. योगेसपाल गुप्ता, अनिल गोयल, हमीर सिह पटेल , कलेक्टर बी कार्तिकेयन, पुलिस अधीक्षक आसुतोष बागरी सहित बही संख्या मे लोग मौजूद थे।

भाई जी के कार्यों को सभी मिलकर पूरा करें

केन्द्रीय मंत्री तोमर ने कहा कि भाई जी की अनुपस्थिति में यह कार्यक्रम भाई जी के व्यक्तित्व, कृतित्व से प्रेरणास्पद एवं प्रेरणा लेकर बड़ी संख्या में गांधीवादी सोच को बड़वाने की मान्यता आज गांधी विचार एवं अहिंसा के विचार को शांति स्थापित करने के लिए देश के कोने कोने में अहिंसात्मक ढंग से कार्य कर रहे हैं, जो निश्चित रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। भाई जी के अधूरे कार्यों को सभी पूरे करें ये सभी का कर्तव्य भी है ।

1972 में समर्पण करने वाले बागी भी आए कार्यक्रम में

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पीवी राजगोपाल राजीव भाई ने कहा कि इस तीन दिवसीय समारोह में 1972 में आश्रम परिसर में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के समक्ष हथियार डालने वाले बागियों में जीवित बचे रमेश सिकरवार, बहादुर सिंह, अजमेर सिंह, सोबरन सिंह, घमंडी, सोने राम, भिंड के गंगा सिंह, राजस्थान की कपूरी बाई और उत्तर प्रदेश के बागी एवं उनके परिजनों के साथ बागी समस्या से पीड़ित रहे परिजनों के परिवारी जन भी उपस्थित हैं। राजीव भाई का कहना था कि गांधी सेवा आश्रम जौरा में बागी समर्पण की 50 वीं वर्षगांठ पर इन 3 दिनों में स्मृति को ताजा किया जा रहा है। ये कार्यक्रम 16 अप्रैल तक चलेंगे, जिसमें 30 राज्यों के 600 से ज्यादा लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

■ वर्ष-01 अंक-169 कुल पृष्ठ-8 | मुरैना, शुक्रवार 15 अप्रैल 2022 | मूल्य ₹ 1.00 | Email- ›› editorajaysahara@gmail.com

केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने भाई जी की समाधि स्थल पर पुष्पांजलि देकर श्रद्धांजलि अर्पित की

।श्रम परिसर में भाई जी डा.एस.एन. सुब्बराव की मूर्ति का अनावरण भी किया

अजय सहारा | मुरैना

70 के दशक के चम्बल के बागी सरगना सरू सिंह, माधो सिंह, मोहर सिंह, माखन-छिद्वा, हरबिलास सिंह व राजस्थान के रामसिंह गिरोह के सदस्य रहे आत्मसमर्पित बागी मानसिंह, मेहरबान सिंह, गंगा सिंह, संतोष सिंह, उम्मेद सिंह, रामभरोसी, घमण्डी सिंह, बूटा सिंह, अजमेर सिंह यादव, बहादुर सिंह कुशवाहा, सोबरन सिंह, सोनेराम, रामस्वरूप सिकरवार, तथा 80 के दशक के आत्मसमर्पित दस्यु रमेश सिंह सिकरवार, बाबू सिंह, प्रभु सिंह और राजस्थान आत्मसमर्पित महिला बागी कपूरी बाई समारोह में शामिल हुए। सभी आत्मसमर्पित बागियों को सम्मानित किया गया। डा.एस.एन सुब्बराव (भाई जी) के नाम से सामाजिक कार्य के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार आंध्रप्रदेश के श्री के.यादव राजू, तमिलनाडु के श्री करूनाकरण और महाराष्ट्र के श्री नरेन्द्र बडगांवकर को प्रदान किया गया। इसमें उनको स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्रम् सहित संयुक्त रूप से एक लाख की धनराशि दी गयी। ज्ञात हो कि चम्बल घाटी में वर्ष 1970 में 14 अप्रैल को लोक नायक जयप्रकाश नारायण के समक्ष चम्बल के कुख्यात और दुर्दान्त बागियों ने गांधी जी के चित्र के समक्ष जौरा स्थित पुराने गांधी आश्रम में अपने हथियार डालकर समर्पण कर दिये थे। उनके समर्पण और पुनर्वास में डा.एस.एन सुब्बराव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। इस वर्ष बागी आत्मसमर्पण के 50 वर्ष पूरे होने पर महात्मा गांधी सेवा आश्रम व एकता परिषद द्वारा इसका आयोजन किया गया। सम्मेलन का संचालन महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सचिव रनसिंह परमार, रमेश शर्मा और राकेश दीक्षित ने किया। सम्मेलन में मैग्सेसे एवार्डी जलपुरूष राजेन्द्र सिंह, इलाहाबाद विष्वविद्यालय के प्रोफेसर प्रदीप शर्मा, समाजवादी पत्रकार जयंत तोमर, सर्वोदय मण्डल उत्तरप्रदेष के श्री रामधीरज भाई राष्ट्रीय युवा योजना के न्यासी सुकुमारन, मधुभाई, श्योपुर के जयसिंह, कैलाष पराषर, एकता परिषद के महासचिव अनीष कुमार, सर्वोदय समाज परिषद के मनीष राजपूत, बिहार के सामाजिक कार्यकर्ता श्री प्रदीप प्रियदर्षी, गांधी स्मृति दर्षन के रजनीष आदि मौजूद थे।

बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ

केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने किया डॉ. एस.एन. सुब्बाराव की प्रतिमा का अनावरण

मुरैना। महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा में बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ पर आज गांधीवादी डॉ. एसएन सुब्बाराव की प्रतिमा का अनावरण केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने किया । इससे पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने एसएन सुब्बाराव की समाधि स्थल पर पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उल्लेखनीय है कि महात्मा गांधी सेवा आश्रम जौरा में बागी आत्म समर्पण की 50वीं वर्षगांठ का आयोजन किया जा रहा है। इससे पहले 3दिवसीय राष्ट्रीय युवा सम्मेलन की 30 राज्यों के 600 से ज्यादा लोगों ने भागीदारी कर बागी समर्पण और शांति स्थापना की पृष्टभूमि का अध्ययन किया। गांधीवादी व सर्वोदयी नेता राजगोपाल पीबी राजगोपालन ने कहा कि चम्बल घाटी का जौरा हिंशा मुक्त प्रतिकार मुक्त व शोषण मुक्ति अभियान की जननी रही है। 1970 के दशक में बागी आत्मसमर्पण प्रतिकार मुक्ति का पहला कदम था। वहीं अदिवासियों को जागरूक कर उनके भूमि अधिकार की लड़ाई शोषण मुक्ति पर केन्द्रित रहा। इसलिए चम्बल घाटी की स्मृति से दुनिया को शांति का संदेश जायेगा। हिंसा प्रति हिंसा में आग बढ़ रहा दुनिया को गांधी के सिद्धातों की बहुत जरूरत है। आज इस समारोह में बागियों में जीवित बचे बहादुर सिंह, अजमेर सिंह, सोवरन सिंह, घमण्डी, सोनेराम, गंगा सिंह व राजस्थान की कपूरी बाई के अलावा उप्र के बागी और उनके परिजनों के साथ बागी समस्या से पीड़ित रहे परिवार के परिजन भी भाग ले रहे हैं।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने भी सम्बोधित किया। इस अवसर पर एकता परिषद के डॉ. रन सिंह परमार, भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ. योगेशपाल गुप्ता विधायक सूबेदार सिंह रजौधा के अलावा डोंगर शर्मा, अनीश भाई, प्रफुल्ल श्रीवास्तव, अनिल भाई सहित देश भर से आये। एकता परिषद के साथी राष्ट्रीय युवा योजना के प्रतिनिधि भी मौजूद थे। इससे पूर्व कल राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में देश भर से आये नौजवानों वयोवृद्ध गांधीजनों के साथ आत्मसमर्पित बागियों द्वारा जौरा में रैली निकालकर शांति अहिंसा से जुड़े नारों के माध्यम से शांति का संदेश दिया व पगारा रोड स्थित समर्पण स्थित पर पहुंचकर पीबी राजगोपालन के नेतृत्व में सर्वधर्मप्रार्थना की।

अपमान, विरोध, उपहास के बाद भी गांधी ने सत्यधर्म नहीं छोड़ा- केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर

शांति व अहिंसा की ताकत बंदूक में नहीं- कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर

चम्बल में न्याय और शांति के लिए शिक्षा और रोजगार की प्राथमिकता हो- समाजवादी चिंतक रघु ठाकुर

दंगा-फसाद मिटाने का रास्ता गांधीवाद में-प्रोफेसर आनंद कुमार

बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ समारोह शुभारंभ

मुरैना। तमाम अपमान, विरोध और उपहास के बाद भी गांधी जी ने जीवन में सत्यधर्म का पालन किया और सत्यधर्म नहीं छोड़ा। भौतिक शरीर से बहुत सारे काम किये जाते है। इसके साथ एक आत्मिक ताकत होती है और यही आध्यात्मिक ताकत व्यक्ति को सर्वमान्य और महान बनाती है उनके शिष्य जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में चम्बल में बागी आत्मसमर्पण का होना प्रेरणादायक घटना है और इसमें भाई जी डा.एस.एन. सुब्बाराव का कार्य बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा। उक्त उद्गार बागी आत्मसमर्पण समारोह में मुख्य अतिथि बतौर केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने जौरा में गांधी सेवा आश्रम में गुरुवार को व्यक्त किये। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर को याद करते हुए कहा कि तमाम सामाजिक बुराईयां, जातिगत भेदभाव को सहने के बाद भी डा. अम्बेडकर ने निष्पक्षता के साथ बिना किसी पूर्वाग्रह के पूरे देश को संचालित करने के लिए संविधान लिखा। उनके जीवन से महान कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। इस अवसर पर जौरा विधायक श्री सूबेदार सिंह रजौधा, भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ योगेश पाल गुप्ता, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गीता हर्षाना, श्री अनिल, श्री केदार सिंह जी, श्री मुंशी लाल जी, कलेक्टर श्री बी कार्तिकेयन, पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष बागरी, सीईओ जिला पंचायत श्री रोशन कुमार सिंह, एसडीएम सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि चम्बल के भिंड और मुरैना की पहचान बागियों और उनके कार्यों से नकारात्मक रहा है। चम्बल की अच्छाईयों को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि चम्बल में बलरामपुर और मितावली के साथ छतिस्त, पड़ियावली पर्क और खेल-प्रतिभाएं भी है उन्होंने जिला प्रशासन से देशभर से आये नौजवानों को चम्बल विशेषकर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल संग्रहालय का भ्रमण कराने की व्यवस्था करने के लिए भी कहा, जिससे नौजवान चम्बल की सकारात्मक छवि को लेकर देश के कोने-कोने में जायेंगे।

प्रख्यात गांधीवादी और एकता परिषद के संस्थापक श्री राजगोपाल पी.व्ही ने सभी आगन्तुकों का स्वागत करते हुए कहा कि चम्बल की घटना से देश व दुनिया में शांति व अहिंसा का संदेश गया। चम्बल की स्मृति से दुनियाको अहिंसा का संदेश जाना चाहिए।

समाजवादी चिंतक और पूर्व सांसद श्री रघु ठाकुर ने कहा कि न्याय व शांति के लिए गांधी के तीन सूत्र 'चलो शहर से गांव की ओर', 'बड़े से छोटे की ओर' तथा 'मशीन से हाथ की ओर' पर काम करने की आवश्यकता है। चम्बल में शिक्षा और रोजगार पर काम करना न्याय व शांति के लिए जरूरी है।

प्रख्यात समाजशास्त्री, अध्येता व जवाहर लाल विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर आनंद कुमार ने कहा कि साम्प्रदायिक एकता के हजार सूत्र देने वाले शंकराचार्यों, मौलवियों और राजनेताओं के होने के बाद भी रामनवमी, होली और ईद के दिन देश में दंगा-फसाद होना चिंता का विषय है। इसे जड़ से मिटाने का रास्ता केवल गांधीवाद में है। गांधी का रास्ता है-तीज त्यौहार में अपने-अपने

टोले-मुहल्ले में जाकर एक दूसरे को बधाईयां देना और भाईचारा बढ़ाना है उन्होंने कहा कि दंगा फसाद संसद और विधानसभा में नहीं होता बल्कि टोले और मुहल्ले में होता है। इसलिए उसका रास्ता भी वहीं है।

सांसद डानियल महात्मे ने अपने उद्बोधन में देश के राजनैतिक परिदृश्य में पारदर्शिता लाने के लिए चुनाव प्रक्रिया एवं प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यकता पर बल दिया।

समाजवादी चिंतक श्री रामप्रताप ने कहा कि चम्बल का विकास पर्यावरणीय पर्यटन, शिक्षा एवं स्वावलम्बन पर ही निर्भर, जिसमें युवाओं की सक्रिय भागीदारी जरूरी होगी। कार्यक्रम के दौरान विलेज इण्डिया एवं जय जगत के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों क्रमशः सुश्री एस्टर (इंग्लैण्ड) व श्रीमती जिलकार हैरिस (कनाडा) ने भी अपने विचार व्यक्त कर शांति संदेश दिया।

भाई जी की मूर्ति का अनावरण

केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने भाई जी की समाधि स्थल पर पुष्पांजलि देकर श्रद्धांजलि अर्पित की, तदोपरांत आश्रम परिसर में भाई जी डा.एस.एन. सुब्बाराव की मूर्ति का अनावरण भी किया।

समारोह में शामिल आत्मसमर्पित बागी

70 के दशक के चम्बल के बागी सरगना मलखान सिंह, माधो सिंह, मोहर सिंह, माखन-छिद्दा, हरविलास सिंह व राजस्थान के रामसिंह गिरोह के सदस्य रहे आत्मसमर्पित बागी महासिंह, मिलखान सिंह, गंगा सिंह, संतोष सिंह, उम्मेद सिंह, रामभरोसी, घमण्डी सिंह, बूटा सिंह, अजमेर सिंह यादव, बहादुर सिंह कुशवाह, सोबरन सिंह, सोनेराम, रामस्वरूप सिकरवार, तथा 80 के दशक के आत्मसमर्पित दस्यु रमेश सिंह सिकरवार, बलू सिंह, प्रभु सिंह और राजस्थान आत्मसमर्पित महिला बागी बापूड़ी बाई समारोह में शामिल हुए। सभी आत्मसमर्पित बागियों को सम्मानित किया गया।

भाई जी संस्कार पुरुस्कार 2022

डा.एस.एन सुब्बाराव (भाई जी) के नाम से सामाजिक कार्य के लिए दिया जाने वाला पुरुस्कार आंध्रप्रदेश के श्री वेंकटस्वा राजू, तमिलनाडु के श्री कल्याणरमण और महाराष्ट्र के श्री नरेन्द्र बडगांवकर को प्रदान किया गया। इसमें उनको स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्रम् सहित संयुक्त रूप से एक लाख की धनराशि दी गयी।

ज्ञात हो कि चम्बल घाटी में वर्ष 1970 में 14 अप्रैल को लोक नायक जयप्रकाश नारायण के समक्ष चम्बल के कुख्यात और दुर्दांत बागियों ने गांधी जी के चित्र के समक्ष जौरा स्थित पुराने गांधी आश्रम में अपने हथियार डालकर समर्पण कर दिये थे। उनके समर्पण और पुनर्वास में डा.एस.एन सुब्बाराव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस वर्ष बागी आत्मसमर्पण के 50 वर्ष पूरे होने पर महात्मा गांधी सेवा आश्रम व एकता परिषद द्वारा इसका आयोजन कियागया। सम्मेलन का संचालन महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सचिव रनसिंह परमार, रमेश शर्मा और संतोष दीक्षित ने किया। सम्मेलन में मैग्सेसे एवार्डी जलपुरुष राजेन्द्र सिंह, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर प्रदीप शर्मा, समाजवादी पत्रकार जयंत तोमर, सर्वोदय मण्डल उत्तरप्रदेश के श्री रामधीरज भाई राष्ट्रीय युवा योजना के न्यासी सुकुमारन, मधुभाई, श्योपुर के जयसिंह, कैलाश पाराशर, एकता परिषद के महासचिव अनीश कुमार, सर्वोदय समाज परिषद के मनीष राजपूत, बिहार के सामाजिक कार्यकर्ता श्री प्रदीप प्रियदर्शी, गांधी स्मृति दर्शन के रजनीश जी अरुणांचल के हरिजिन्दास, बिहार के मुकेश, त्रिपुरा के देवाशीष, इण्डोनेशिया से आये प्रख्यात गांधीवादी और पद्मश्री से सम्मानित श्री इन्दिरा उदयन सहित देशभर के गांधीवादी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

वर्ष 16 ● अंक 46 — www.hindustanexpress.online — भोपाल, शुक्रवार 15 अप्रैल 2022 — email - hindustanexpressbhopal@gmail.com, hindustanexpresshe@gmail.com — मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

जो ताकत शांति व अहिंसा में है वह बंदूक की गोली में नहीं: नरेन्द्र सिंह

चम्बल में न्याय और शांति के लिए शिक्षा और रोजगार की प्राथमिकता हो : रघु ठाकुर
- दंगा-फसाद मिटाने का रास्ता गांधीवाद में : प्रो. आनंद कुमार
- बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ मनाई गई

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। तमाम अपमान, विरोध और उपहास के बाद भी गांधी जी ने जीवन में सत्यधर्म का पालन किया और सत्यधर्म नहीं छोड़ा। भौतिक शरीर से बहुत सारे काम किये जाते हैं। इसके साथ एक आत्मिक ताकत होती है और यही आध्यात्मिक ताकत व्यक्ति को सर्वमान्य और महान बनाती है। उनके शिष्य जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में चम्बल में बागी आत्मसमर्पण का होना प्रेरणादायक घटना है और इसमें भाई जी डा.एस.एन. सुब्बराव का कार्य बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा। उक्त उद्गार बागी आत्मसमर्पण समारोह में मुख्य अतिथि बतौर केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने जौरा में गांधी सेवा आश्रम में गुरूवार को व्यक्त किये। केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर को याद करते हुए कहा कि तमाम सामाजिक बुराईयां, जातिगत भेदभाव को सहने के बाद भी डॉ. अम्बेडकर ने निष्पक्षता के साथ बिना किसी पूर्वाग्रह के पूरे देश को संचालित करने के लिए संविधान लिखा। उनके जीवन से महान कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। इस अवसर पर जौरा विधायक सूबेदार सिंह रजौधा, भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ. योगेशपाल गुप्ता, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गीता-इन्दर हर्षाना, अनिल, केदार सिंह, मुंशीलाल, कलेक्टर बी. कार्तिकेयन, पुलिस अधीक्षक आशुतोष बागरी, सीईओ जिला पंचायत रोशन कुमार सिंह, एसडीएम सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि चम्बल के भिंड और मुरैना की पहचान बागियों और उनके कार्यों से नकारात्मक रहा है। चम्बल की अच्छाईयों को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि चम्बल में ककनमठ और मितावली के साथ डॉल्फिन, घड़ियाल पार्क और खेत-खलिहान भी हैं। उन्होंने जिला प्रशासन से देशभर से आये नौजवानों को चम्बल विशेषकर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल संग्रहालय का भ्रमण कराने की व्यवस्था करने के लिए भी कहा, जिससे नौजवान चम्बल की सकारात्मक छवि को लेकर देश के कोने-कोने में जायेंगे।

प्रख्यात गांधीवादी और एकता परिषद के संस्थापक राजगोपाल पी.व्ही ने सभी आगन्तुकों का स्वागत करते हुए कहा कि चम्बल की घटना से देश व दुनिया में शांति व अहिंसा का संदेश गया। चम्बल की स्मृति से दुनिया को अहिंसा का संदेश जाना चाहिए।

समाजवादी चिंतक और पूर्व सांसद रघु ठाकुर ने कहा कि न्याय व शांति के लिए गांधी के तीन सूत्र 'चलो शहर से गांव की ओर', 'बड़े से छोटे की ओर' तथा 'मशीन से हाथ की ओर' पर काम करने की आवश्यक्ता है। चम्बल में शिक्षा और रोजगार पर काम करना न्याय व शांति के लिए जरूरी है।

प्रख्यात समाजशास्त्री, अध्येता व जवाहर लाल विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर आनंद कुमार ने कहा कि साम्प्रदायिक एकता के हजार सूत्र देने वाले शंकराचार्यों, मौलवियों और राजनेताओं के होने के बाद भी रामनवमी, होली और ईद के दिन देश में दंगा-फसाद होना चिंता का विषय है। इसे जड़ से मिटाने का रास्ता केवल गांधीवाद में है। गांधी का रास्ता है-तीज त्योहार में अपने-अपने टोल-मुहल्ले में जाकर एक दूसरे को बधाईया देना और भाईचारा बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि दंगा-फसाद संसद और विधानसभा में नहीं होता बल्कि टोले और मुहल्ले में होता है। इसलिए उसका रास्ता भी वहीं है।

सांसद डा विकास महात्मने ने अपने उद्बोधन में देश के राजनैतिक परिदृष्य में पारदर्शिता लाने के लिए चुनाव प्रक्रिया एवं प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यक्ता पर बल दिया।

समाजवादी चिंतक रामप्रताप ने कहा कि चम्बल का विकास पर्यावरणीय पर्यटन, शिक्षा एवं स्वावलम्बन पर ही निर्भर, जिसमें युवाओं की सक्रिय भागीदारी करानी होगी। कार्यक्रम के दौरान विलेज इण्डिया एवं जय जगत के अंतराष्ट्रीय प्रतिनिधियों क्रमशः सुश्री एस्टर (इंग्लैण्ड) व श्रीमती जिलकार हैरिस (कनाडा) ने भी अपने विचार व्यक्त कर शांति संदेश दिया।

भाई जी की मूर्ति का अनावरण

केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने भाई जी की समाधि स्थल पर पुष्पांजलि देकर श्रद्धांजलि अर्पित की, तदोपरांत आश्रम परिसर में भाई जी डॉ. एस.एन. सुब्बराव की मूर्ति का अनावरण भी किया।

शेष पृष्ठ 7 पर...

वर्ष 10 अंक 14 मुरैना, शुक्रवार 15 अप्रैल 2022 पृष्ठ 8 मूल्य 1 रुपये

अपमान, विरोध, उपहास के बाद भी गांधी ने सत्यधर्म नहीं छोड़ा: केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर

- शांति व अहिंसा की ताकत बंदूक में नहीं- कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर
- चम्बल में न्याय और शांति के लिए शिक्षा और रोजगार की प्राथमिकता हो-समाजवादी चिंतक रघु ठाकुर
- दंगा-फसाद मिटाने का रास्ता गांधीवाद में-प्रोफेसर आनंद कुमार
- बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ समारोह शुभारंभ

मुरैना। तमाम अपमान, विरोध और उपहास के बाद भी गांधी जी ने जीवन में सत्यधर्म का पालन किया और सत्यधर्म नहीं छोड़ा। भौतिक शरीर से बहुत सारे काम किये जाते हैं। इसके साथ एक आत्मिक ताकत होती है और यही आध्यात्मिक ताकत व्यक्ति को सर्वमान्य और महान बनाती है। उनके शिष्य जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में चम्बल में बागी आत्मसमर्पण का होना प्रेरणादायक घटना है और इसमें भाई जी डा.एस.एन. सुब्बराव का कार्य बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा। उक्त उद्गार बागी आत्मसमर्पण समारोह में मुख्य अतिथि बतौर केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने जौरा में गांधी सेवा आश्रम में गुरूवार को व्यक्त किये। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर को याद करते हुए कहा कि तमाम सामाजिक बुराईयां, जातिगत भेदभाव को सहने के बाद भी डा. अम्बेडकर ने निष्पक्षता के साथ बिना किसी पूर्वाग्रह के पूरे देश को संचालित करने के लिए संविधान लिखा। उनके जीवन से महान कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। इस अवसर पर जौरा विधायक श्री सूबेदार सिंह रजौधा, भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ योगेश पाल गुप्ता, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती गीता हर्षाना, श्री अनिल, श्री केदार सिंह जी, श्री मुंशी लाल जी, कलेक्टर श्री बी कार्तिकेयन, पुलिस अधीक्षक श्री आशुतोष बागरी, सीईओ जिला पंचायत श्री रोशन कुमार सिंह, एसडीएम सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि चम्बल के भिंड और मुरैना की पहचान बागीयों और उनके कार्यो से नकारात्मक रहा है। चम्बल की अच्छाईयों को रेखांकित करते हुए उन्होने कहा कि चम्बल में ककनमठ और मितावली के साथ डाल्फिन, घडियाल पार्क और खेत-खलिहान भी हैं। उन्होंने जिला प्रशासन से देशभर से आये नौजवानों को चम्बल विशेषकर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल संग्रहालय का भ्रमण कराने की व्यवस्था करने के लिए भी कहा, जिससे नौजवान चम्बल की सकारात्मक छवि को लेकर देश के कोने-कोने में जायेंगे। प्रख्यात गांधीवादी और एकता परिषद के संस्थापक श्री राजगोपाल पी.व्ही ने सभी आगन्तुकों का स्वागत करते हुए कहा कि चम्बल की घटना से देश व दुनिया में शांति व अहिंसा का संदेश गया। चम्बल की स्मृति से दुनिया को अहिंसा का संदेश जाना चाहिए। समाजवादी चिंतक और पूर्व सांसद श्री रघु ठाकुर ने कहा कि न्याय व शांति के लिए गांधी के तीन सूत्र 'चलो शहर से गांव की ओर', 'बडे से छोटे की ओर' तथा 'मशीन से हाथ की ओर' पर काम करने की आवश्यक्ता है। चम्बल में शिक्षा और रोजगार पर काम करना न्याय व शांति के लिए जरूरी है। प्रख्यात समाजशास्त्री, अध्येता व जवाहर लाल विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर आनंद कुमार ने कहा कि साम्प्रदायिक एकता के हजार सूत्र देने वाले शंकराचार्यो, मौलवियों और राजनेताओं के होने के बाद भी रामनवमी, होली और ईद के दिन देश में दंगा-फसाद होना चिंता का विषय है। इसे जड़ से मिटाने का रास्ता केवल गांधीवाद में है। गांधी का रास्ता है-तीज त्योहार में अपने-अपने टोल-मुहल्ले में जाकर एक दूसरे को बधाइंया देना और भाईचारा बढाना है। उन्होने कहा कि दंगा फसाद संसद और विधानसभा में नहीं होता बल्कि टोले और मुहल्ले में होता है। इसलिए उसका रास्ता भी वहीं है।

सांसद डा विकास महात्मने ने अपने उद्बोधन में देश के राजनैतिक परिदृष्य में पारदर्शिता लाने के लिए चुनाव प्रक्रिया एवं प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यक्ता पर बल दिया।

समाजवादी चिंतक श्री रामप्रताप ने कहा कि चम्बल का विकास पर्यावरणीय पर्यटन, शिक्षा एवं स्वावलम्बन पर ही निर्भर, जिसमें युवाओं की सक्रिय भागीदारी करानी होगी। कार्यक्रम के दौरान विलेज इण्डिया एवं जय जगत के अंतराष्ट्रीय प्रतिनिधियों क्रमशः सुश्री एस्टर (इग्लैण्ड) व श्रीमती जिलकार हैरिस (कनाडा) ने भी अपने विचार व्यक्त कर शांति संदेश दिया। भाई जी की मूर्ति का अनावरण केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने भाई जी की समाधि स्थल पर पुष्पांजलि देकर श्रद्धांजलि अर्पित की, तदोपरांत आश्रम परिसर में भाई जी डा.एस.एन. सुब्बराव की मूर्ति का अनावरण भी किया।

दस्यु आत्मसमर्पण स्वर्ण जयंती समारोहः आत्म समर्पित बागियों ने सुनाई दास्तां

दबंगों ने जमीन कब्जाई तो बंदूक लेकर बीहड़ में कूदी पुलिस थाना भी फूंका, पर सुकून तो अहिंसा में ही है...

"मैं मानती हूं कि अहिंसा में ही सुकून (शांति) है, लेकिन यह समाज कभी-कभी इस तरह प्रताड़ित करता है कि मेरी तरह न चाहते हुए भी हिंसा का रास्ता चुनना पड़ता है। आज भी मुझे याद है। साल 1969 की बात रही होगी। राजस्थान राजाखेड़ा के बसई बियाराम गांव में अपने पति खड़ग सिंह राजपूत के साथ रहती थी। उनके 5 भाई भी थे। गांव के दबंगों ने हमारी जमीन पर कब्जा कर लिया, खेत नहीं जोतने देते थे। पुलिस ने भी हमारी सुनवाई नहीं की। उल्टे मेरे पति, जेठों को ही जेल में डालने की धमकी दी। जब दूसरा रास्ता नहीं सूझा तो बंदूक थामकर बीहड़ की डगर पकड़ ली। पति खडग सिंह

कार्यक्रम में पूर्व महिला दस्युकपूरी देवी।

के साथ हमने 25 लोगों की गैंग बनाई और गिरोह का नाम पति के नाम पर ही रखा। दुश्मनों से बदला लेने के बाद हमारी गैंग ने आधा दर्जन फकड़ (अपहरण) कीं। गैंग में शामिल मेरे पिता हरिविलास को पुलिस ने फकड़ लिया तो मैंने गैंग के साथ उत्तरप्रदेश का शमशाबाद थाना घेरकर उसमें आग लगा दी। हमारी गोलीबारी से 12 पुलिसकर्मी जख्मी हुए और एक संतरी की मौत हो गई। 1969 से 1976 तक हमारे गैंग की मप्र, यूपी व राजस्थान में धाक रही। 1972 में सुब्बाराव जी ने चंबल के बागियों का सरेंडर कराया तो उनकी चर्चा हम तक पहुंची। उनके विचारों से प्रभावित होकर हमारी 25 सदस्यीय गैंग ने धौलपुर के तालाबशाही पर हथियार डाल दिए। *साहब, गरीब को पेट भरने के लिए अन्न चाहिए, हथियार नहीं। सरकार अगर सिस्टम को सुधारे तो बागी व बगावत जैसे शब्द पैदा ही नहीं होंगे।* - जैसा आत्मसमर्पित बागी 74 वर्षीय कपूरी देवी ने दैनिक भास्कर के विजय गुप्ता को बताया।

दस्यु आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती • आधी सदी बाद भी हल नहीं हो सकीं पुरानी परेशानियां

पूर्व बागियों का दर्द... किसी को जमीन मिली तो कागजों में हक नहीं; किसी को कागज मिले, जमीन दूसरे के कब्जे में

हरेकृष्ण दुबोलिया | जौरा/भोपाल

बागियों के आत्मसमर्पण को 50 वर्ष हो गए, लेकिन इनकी चुनौतियां अभी तक खत्म नहीं हुई हैं। धौलपुर के राजाखेड़ा में रह रही भारत की पहली आत्मसमर्पित महिला दस्यु और शार्प शूटर रही कपूरीबाई (खरगा-कपूरी गैंग) 75 साल की हो चुकी हैं, लेकिन राजस्थान सरकार ने उन्हें जो 20 बीघा जमीन दी थी, अभी तक रिकॉर्ड में उनके नाम दर्ज नहीं हो सकी है। कपूरी ने पति खरगा के साथ 1976 में धौलपुर में एसएन सुब्बाराव के कहने पर हथियार डाले थे। कपूरी कहती हैं कि दबंगों ने उनके देवर छोटेलाल के बेटे जितेंद्र की पिछले साल हत्या कर दी पर अब हमारे खानदान से कोई हथियार नहीं उठाएगा। कपूरी ने बताया कि शादी के एक साल बाद 1970 में पति ने बागी बनने का फैसला किया तो मैंने भी 20 साल की उम्र में उनके साथ बंदूक उठा ली। जौरा के गांधी आश्रम में 1972 के दस्यु आत्मसमर्पण के स्वर्ण जयंती समारोह में कपूरी बाई ने ये दर्द साझा किया।

कपूरी बाई

रमेश सिकरवार पर लादे झूठे केस

श्योपुर जिले के लहरौनी गांव के रमेश सिकरवार सरेंडर के बाद भी गनमैनों से घिरे रहते हैं। वजह ये है कि सरेंडर के बाद रमेश राजनीतिक रूप से सक्रिय हुए तो पांच साल पहले उनके खिलाफ झूठे मुकदमे दर्ज करा दिए गए। जमीन पर कब्जा हो गया। 2017 में रमेश सिंह ने फिर से बीहड़ में कूदने की चेतावनी दी तो प्रशासन ने झूठे मुकदमे खारिज किए और कब्जा खाली करा दिया। रमेश स्वीकार करते हैं कि पिता की मौत के बाद सगे चाचा ने उनकी जमीन हड़प ली थी। इसलिए चाचा को हत्या उन्होंने की थी। चंबल में 90 फीसदी झगड़ों में जमीन विवाद है।

कब्जा हटाने थाने-तहसील के चक्कर काट रहे कूटसिंह

कूट सिंह रावत (72) को मप्र सरकार ने श्योपुर जिले की विजयपुर तहसील के उल्लपुर गांव में 30 बीघा जमीन दी थी। इस पर तीन लोगों ने कब्जा कर लिया है, जिसे खाली कराने के लिए कूट सिंह थाने और तहसील के चक्कर काट रहे हैं। गोटा गांव में पैतृक जमीन पर कब्जे के विवाद में विरोधी की हत्या के बाद वे फरार होकर मलखान सिंह की गैंग में शामिल हो गए थे।

पूर्व दस्यु बोले- समाज ने अपनाया पर सरकारों ने भुलाया

कार्यक्रम ● जौरा में बनी डकैतों के आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती, 20 पूर्व बागियों का हुआ सम्मान, बागियों ने सुनाई अपनी आपबीती

मुरैना (नईदुनिया प्रतिनिधि)। दुनिया में डकैतों का सबसे बड़ा आत्मसमर्पण 14 अप्रैल 1972 को मप्र के मुरैना जिले के जौरा कस्बे के गांधी सेवा आश्रम में हुआ। इसी आश्रम में बागी आत्मसमर्पण की स्वर्णजयंती 12 से 16 अप्रैल तक मनाई जा रही है। गुरुवार को आयोजित मुख्य कार्यक्रम में आए कई बागियों ने अपनी आपबीती सुनाते हुए कहा कि बीहड़ छोड़ने व हथियार डालने के बाद समाज ने तो दिल से अपना लिया, लेकिन मप्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश की सरकारों ने जो वादे किए, वह पूरे नहीं हुए।

इस दौरान पूर्व दस्यु रमेश सिंह ने कहा कि जब बीहड़ में थे तब गोला-बारूद की बारिश हम पर होती थी और यहां फूलों की बारिश हो रही है। हमने हथियार फेंककर, अहिंसा का रास्ता अपनाकर यह पाया है, जो बंदूक से किसी को नहीं मिला। आत्मसमर्पित डकैत सोनेराम सिंह ने बताया कि समाज ने पूरा मान, सम्मान मिला, लेकिन सरकार ने जो वादा किया वह पूरा नहीं किया, उन्हें शिवपुरी जिले में जमीन का पट्टा तो मिला, पर यह जमीन आज तक नहीं मिली। पूर्व डकैत कूटा सिंह की भी यही परेशानी है और जमीन पर कब्जा नहीं मिला। 40 साल से जमीन के लिए लड़लड़ कर हार चुके कूटा सिंह जीवनयापन के लिए पट्टे की जमीन को बेचने को तैयार है, लेकिन यह बिक भी नहीं रही। उप्र से आए पूर्व डकैत रामकिशन राठौर के बेटे ओमप्रकाश ने बताया कि उनके पिता को मिली पट्टे की जमीन उप्र सरकार ने आज तक नहीं दी। वह 12 हजार रुपये महीने में सुरक्षा गार्ड की नौकरी करके परिवार पाल रहे हैं।

कोई पुलिस के कारण तो कोई दोस्त के लिए बागी बना: गांधी सेवा आश्रम में आए पूर्व बागियों ने अपनी-अपनी आपबीती सुनाई। माधौसिंह गैंग में पांच साल तक कुख्यात डकैत रहे रामस्वरूप सिंह सिकरवार बताते हैं कि वह मुरैना के तत्कालीन एसपी कुरैशी के कारण डाकू बनने को मजबूर हुए थे। एसपी कुरैशी उनके गांव में हर रोज पुलिस भेजते। डकैतों की मुखबिरी के संदेह में उन्हें खूब प्रताड़ित किया गया, इसके बाद वह बंदूक लेकर बीहड़ों में उतर गए। शिवपुरी जिले की बैराड़ तहसील के केमई गांव निवासी पूर्व डकैत बाबू सिंह परिहार 10 साल तक कुख्यात डकैत रहे। वह बताते हैं कि डकैत रमेश सिंह सिकरवार उनके बचपन के दोस्त है। जब रमेश सिकरवार डकैत बना तो पुलिस ने उनका जीना मुश्किल कर दिया। बार-बार उठाकर ले जाते और रमेश सिकरवार को मरवाने की बात करते, इनाम का लालच देते। लेकिन दोस्त से दगा करने के बजाय बाबू सिंह परिहार खुद ही बंदूक लेकर बागी बन गया।

युवा यहां की सकारात्मक छवि से परिचित हों: कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए देश के कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि एक समय चम्बल के भिंड और मुरैना की पहचान बागियों और उनके कार्यों से नकारात्मक रही है। लेकिन अब चम्बल में ककनमठ और मितावली के साथ डाल्फिन, घड़ियाल पार्क और खेत-खलिहान भी हैं। उन्होंने देशभर से आए युवाओं का कहा कि आप यहां आए हैं तो यह सभी चीजें देखकर आएं, चंबल की सकारात्मक छवि अपने साथ लेकर जाएं। इस दौरान समाजवादी चिंतक, समाजवादी चिंतक रामप्रताप सिंह, पूर्व सांसद रघु ठाकुर, सांसद व पद्मश्री डा बिकास महात्मे से लेकर इंग्लैण्ड से आई एस्टर और कनाडा की जिलकार हेरिंग ने भी शांति, सद्भाव के लिए गांधीवाद के रास्ते को सबसे अहम बताया। कार्यक्रम में एकता परिषद के संयोजक राजगोपालन पीवी, गांधी सेवा आश्रम के सचिव रणसिंह परमार, मैग्सेसे एवार्डी जलपुरुष राजेन्द्र सिंह, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर प्रदीप शर्मा, समाजसेवी जयंत तोमर आदि मौजूद थे।

मुरैना के जौरा में बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ पर गुरुवार को आयोजित समारोह में जुटे बाएं से पूर्व महिला दस्यु कपूरी बाई राजपूत, सोनेराम सिंह, रमेश सिंह सिकरवार, बाबू सिंह परिहार, प्रभु सिंह चंदेल। ● नईदुनिया

पति-देवर के साथ डकैत रही कपूरी बोली- सरकार ने नहीं दी जमीन

राजस्थान के धौलपुर जिले की राजाखेड़ा तहसील के बसईघियाराम गांव निवासी 77 साल की पूर्व दस्यु सुंदरी कपूरी बाई राजपूत भी जौरा के गांधी सेवा आश्रम में अपने दो बेटों रविंद्र व सुग्रीव सिंह के साथ आईं। कपूरी बाई ने बताया कि गांव के दबंगों की प्रताड़ना से तंग आकर साल 1968 में उसके पति खरग सिंह, देवर छोटेलाल के साथ वह बीहड़ों में कूद गई। पति खरग सिंह ने अपनी गैंग बनाई, जिसमें 22 सदस्य थे। चार साल में कई दर्जनों अपहरण व कई हत्याएं की। 12 अप्रैल 1972 को राजस्थान के तालाबशाही में पति, देवर के साथ हथियार डाल दिए। चार साल जेल में रहे। सरकार ने 20 बीघा जमीन पहले तो पाकिस्तान बार्डर के पास, श्रीगंगानगर के रेगिस्तान में दे दी। बाद में गांव में ही 20 बीघा जमीन का कब्जा दे दिया, लेकिन इस जमीन को सरकारी रिकार्ड में हमारे नाम नहीं किया जा रहा। कपूरी बाई बताती है कि गांव के दबंग अब फिर उनके परिवार को परेशान करने लगे हैं। पिछले साल देवर के बेटे जितेंद्र को कुछ दबंगों ने ट्रैक्टर से कुचलकर मार दिया। पूरा परिवार प्रताड़ित है, लेकिन सरकार अब हमारी नहीं सुनती। मैं अपने बच्चों को हथियार उठाने नहीं दूंगी, अहिंसा के साथ अपने हक की लड़ाई लड़ती रहूंगी।

अहिंसा का इतिहास रचने वाला मूल आश्रम नहीं बन पाया अहिंसा विद्यालय

जौरा में जिस गांधी सेवा आश्रम में सैकड़ों डकैतों ने आत्मसमर्पण किया था, वह मूल आश्रम 27 दिसंबर 1970 को पगारा रोड बनाया गया था, जहां अब डिग्री कालेज बन गया है। गांधी सेवा आश्रम पूरी तरह खण्डहर, वीरान हो चुका है। नया गांधी सेवा आश्रम अलापुर में मनकामेश्वर मंदिर के सामने है, जो सर्वसुविधा युक्त है। पर, दुनियाभर को अचंभित करने वाला और चंबल की धरती से डकैतों के खात्मे की नींव रखने वाला यह आश्रम दुर्दशा पर आंसू बहा रहा है। इस आश्रम को देश का इकलौता अहिंसा विद्यालय बनाने की प्लानिंग 40 साल पहले से शुरू हुई। इस दौरान प्रदेश में कई बार भाजपा-कांग्रेस की सरकार बनी। एकता परिषद के राष्ट्रीय संयोजक राजगोपाल पीवी बताते हैं, कि गांधी सेवा आश्रम व सर्वोदय परिवार ने चार दशक में सैकड़ों पत्र इसे लेकर लिखे। मुख्यमंत्री रहते हुए अर्जुन सिंह, सुंदरलाल पटवा, दिग्विजय सिंह, उमा भारती, कमल नाथ और शिवराज सिंह चौहान तक ने इस पर सहमति जताई। मुरैना के पूर्व सांसद अनूप मिश्रा ने तो सांसद निधि से 10 लाख रुपये देने का ऐलान किया। पर अहिंसा स्कूल धरातल पर नहीं उतरा।

पगारा रोड स्थित गांधी सेवा आश्रम जो अब जर्जर हाल है, इसी आश्रम में हुआ था सैकड़ों बागियों का आत्मसमर्पण। ● नईदुनिया

स्वर्ण जयंती समारोह में शामिल पूर्व बागी अपने सम्मान पत्र के साथ। ● नईदुनिया

हत्या के झूठे केस के कारण फिर बागी बनने का मन हुआ, पर भाईजी ने रोक दिया था : रमेश सिकरवार

इस आयोजन में चंबल के कुख्यात डकैत रमेश सिकरवार भी अपने कई साथियों के साथ पहुंचे। सगे चाचा गिरवरसिंह ने परिवार की 250 बीघा जमीन पर कब्जा कर लिया, इसलिए चाचा की हत्या कर 1975 में डकैत बने और पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह के आगे 27 अक्टूबर 1984 को हथियार डाल दिए। 70 से ज्यादा हत्या और 250 से ज्यादा अपहरण करने वाले डकैत रमेश सिकरवार तब कुख्यात हुए जब, उनकी गैंग के सदस्य हलुके धानुक को पुलिस ने मार गिराया और उसका बदला लेने के लिए रमेश सिकरवार ने 27 मारवाड़ियों को लाइन में खड़ा करके एक गोली से मार डाला। उसके बाद श्योपुर के गोरस में बस सहित 18 लोगों का अपहरण कर लिया, जिन्हें एक महीने जंगल में रखा और 36 लाख रुपये की फिरौती लेकर छोड़ा था। बकौल रमेश सिकरवार उसने यह राशि आदिवासी व गरीबों की बेटी की शादियों के लिए बांटी। आत्मसर्पण के बाद कई साल जेल में रहने के बाद सामान्य जीवन जीने लगा, लेकिन राजनीतिक षड्यंत्र के चलते 2013 में वीरपुर के कैमारा गांव के काशीराम रावत व उसके भतीजे की हत्या का आरोप उन पर लगाकर दो साल के लिए जेल भेज दिया, जबकि यह हत्याएं भदौरिया गैंग ने की थी। मुख्यमंत्री तक ने कहा था कि मेरे खिलाफ षडयंत्र हुआ है, पर मुझे न्याय नहीं मिला और जेल जाना पड़ा। उस समय फिर से बंदूक उठाने का मन हुआ, मेरी गैंग के कई पुराने साथी भी साथ आने तैयार हो गए, लेकिन भाईजी (डा. एसएन सुब्बाराव) ने रोक दिया था।

इस कार्यक्रम में कई लोग बंदूक टांगकर पहुंचे, आयोजन में शामिल लोग इन्हें बड़ी हैरानी से देख रहे थे। ● नईदुनिया

बागियों ने डाले हथियार तो बीहड़ में बहने लगी विकास की बयार

आयोजन बागियों के सामूहिक आत्मसर्पण की स्वर्ण जयंती आज मनेगी, भाईजी की प्रतिमा का अनावरण भी होगा, कार्यक्रम में शामिल होने देश के कई राज्यों से आए गांधीवादी

आत्मसर्पण करने आए डकैतों से चर्चा करते विनोबा भावे व अन्य। • नईदुनिया

यह थे चंबल के प्रमुख डकैत

1 • 1950 से 1960 ... पुलिस ने एनकाउंटर में मारा।

2 • 1980 के दशक में चंबल में आतंक ... 94 प्रकरण दर्ज थे ... पुलिस के दबाव में हथियार डाले

3 • 1980 के दशक में आतंक ... गैंग में 100 से अधिक सदस्य
• बीहड़ में बैठकर दिल्ली के व्यापारी का अपहरण किया, जयप्रकाश नारायण से प्रभावित होकर हथियार डाले

4 • 1940 से 1955 तक आतंक ... 200 से अधिक लूट व हत्या के मामले दर्ज थे

5 • कुख्यात बेहमई नरसंहार फूलन के नाम पर दर्ज है। दुष्कर्म का दंश झेलने के बाद हथियार उठाए। हथियार डालने के बाद संसद तक पहुंची। एक युवक ने दिल्ली में गोली मारकर हत्या की।

6 • यह गैंग बीहड़ों में घूमने वाली आखिरी गैंग मानी जाती है। गैंग में 70 से 75 महिला व पुरुष सदस्य थे। गैंग एके-47 से लेकर नाइट विजन दूरबीन व बुलेट प्रूफ जैकेट तक का उपयोग करती थी। यह गैंग मोबाइल का उपयोग भी करती थी।

7 गड़रिया गिरोह के नाम से यह एक ही परिवार के कई सदस्यों की गैंग था, जिसमें मुख्य तौर पर रामबाबू, दयाराम गड़रिया शामिल थे।

... सुविधाओं की कमी नहीं है। यही नहीं बीहड़ सैलानियों के आकर्षण का केंद्र भी बन गए हैं।

मेरी जमीन पर फिर दबंगों ने कब्जा कर लिया पर मैं हिंसा नहीं करूंगा : अजमेर सिंह

76 साल के पूर्व डकैत अजमेर पुत्र गोरेलाल यादव बताते हैं कि वह कई साल तक बीहड़ों के सबसे कुख्यात मोहर सिंह डकैत गैंग के सदस्य थे। मूलरूप से ग्वालियर के कुलैथ गांव के रहने वाले अजमेर सिंह अब कैलारस के पैतापुरा में रहते हैं। वह बताते हैं कि गांव के दबंग रामस्वरूप त्यागी व रामस्वरूप शर्मा ने उनकी जमीन हड़प ली। इसीलिए इन दोनों की हत्या कर डकैत बन गया। गैंग में 60 बागी थे, सब पर बदूंकें थीं। खाने-पीने के सामान, असला-बारूद को ढोने के लिए हर समय गैंग के कब्जे में 40 अपहृत रहते थे। फिरौती मिल जाने के बाद अगर किसी दिन 10 अपहृतों को मुक्त करते थे, तो उनके बदले उसी दिन 10 नई पकड़ करके लाते थे। आत्मसमर्पण के समय हिंसा न करने का जो प्रण लिया था, उस पर आज भी कायम हूं। मेरी पुश्तैनी जमीन पर कुछ दबंगों ने फिर कब्जा कर लिया है, उनको मनाने में जुटा हूं, पर हिंसा का रास्ता नहीं अपनाऊंगा। हालांकि उनको अफसोस है कि आत्मसर्पण के बाद सरकार ने सेमई में साढ़े नौ और गुना जिले में 20 बीघा ऐसी जमीन दी है, जहां खेती ही नहीं हो सकती।

सेना में था, प्रताड़ना से तंग आकर दबंग की हत्या कर बागी बन गया : बहादुर सिंह

10 साल तक हरिविलास-माधौसिंह गैंग के सदस्य रहे पूर्व दस्यु बहादुर सिंह कुशवाह बताते हैं, कि चंबल के अन्य युवाओं की तरह वह भी 20 साल की उम्र में सेना में भर्ती हुए। दो साल सेना में रहे। बीमारी से माता-पिता की मौत के बाद दबंगों ने 150 बीघा जमीन कब्जा ली। विरोध करने पर प्रताड़ित किया, गांव में रहना मुश्किल हो गया। इसके बाद बीच गांव में दबंग को गोली मारी और फिर 1962 बीहड़ों में कूद गया। 82 साल के बहादुर सिंह बताते हैं, कि सेना में रहकर कई हथियार चलाना सीखे, इसलिए हरिविलास-माधौसिंह की गैंग की आटोमेटिक गन मशीन उन्हें दी गई। बहादुर सिंह बताते है कि अपने साथियों को छुड़ाने के लिए 1963 में कैलारस थाने पर हमला कर उसे तहस-नहस कर दिया था, कई पुलिसकर्मी मारे गए थे। बकौल बहादुर सिंह 1972 में आत्मसर्पण किया, उसके बाद किसी को मारना तो दूर गाली तक नहीं दी।

डकैतों के आतंक से व्यापार मुश्किल था, अपहरण के बाद गांव छोड़ना पड़ा

साल 1950 से 1970 तक बीहड़ों में डकैतों की खुद की सत्ता थी। शासन-प्रशासन के कोई आदेश नहीं माने जाते थे। आतंक ऐसा था कि सूरज ढलते ही ... है जौरा निवासी 76 वर्षीय गंगाराम अग्रवाल का। उनका परिवार जौरा से पांच किलोमीटर दूर गढ़ी-धमकन गांव में रहता था, 1951 में जब वह 7 साल के थे तब डकैत बारेलाल की गैंग ऊंट पर बैठकर आई और रात के समय पिता के पास सोते समय उठाकर ले गई। 24 दिन बाद फिरौती के 5000 रुपये लेकर छोड़ ... के अपहरण के तीन साल बाद, पिता मथुरालाल अग्रवाल का अपहरण डकैत रूपसिंह की गैंग ने कर लिया था। तीन दिन बाद 3000 रुपये की फिरौती लेने के बाद छोड़ा। वह कहते हैं कि उनके पिता क्षेत्र के बड़े व्यापारी थे। इसलिए डकैतों की नजर उनके परिवार पर रहने लगी। डकैतों के डर से उन्होंने गांव छोड़ दिया और जौरा कस्बे में आकर बस गए।

... लिए गांधी सेवा आश्रम ... गांवों में ...

डा. राजगोपाल पीवी, राष्ट्रीय संरक्षक, एकता परिषद

सामयिक

अब चंबल के बीहड़ों में क्यों नहीं गरजतीं बंदूकें?

सुनील कुमार गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

क्या आप जानते हैं कि चंबल के बीहड़ों में अब डकैतों की बंदूकें क्यों नहीं गरजतीं? बीहड़ क्यों खामोश हैं, शांत हैं, आतंक के खौफ से आजाद हैं? क्यों बदले की आग में युवाओं का खून बागी बनकर नहीं खौलता ? शायद नहीं, तो हम आपको बता दें कि चंबल की इसी रेतीली, ऊबड़-खाबड़, खून से सनी जमीन पर आज से ठीक 50 साल पहले यानी 14 अप्रैल 1972 को बागियों के हृदय परिवर्तन और आत्मसमर्पण की ऐसी ऐतिहासिक घटना हुई थी, जिसने चंबल घाटी की तस्वीर बदल कर रख दी. मलखान सिंह , मोहर सिंह, माधो सिंह, बहादुर सिंह, अजमेर सिंह जैसे खूंखार दस्युओं ने गांधीजी की तस्वीर के सामने अपनी बंदूकें रखकर शांति और अहिंसा के रास्ते पर चलने का संकल्प लिया था. गांधीवादी विचारक स्व. डॉ. एस.एन. सुब्बाराव, विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण जैसी महान विभूतियों के अथक प्रयासों से घाटी में शांति का यह ऐतिहासिक पल आया था. उसी ऐतिहासिक पल की 50वीं वर्षगांठ समारोह की शुरूआत आज मुरैना के जौरा स्थित महात्मा गांधी सेवा आश्रम में बेहद उत्सवी माहौल हुई. जिसमें बड़ी संख्या में 1972 में हथियार डालने वाले पूर्व दस्यु और उनके परिजन शामिल हुए हैं. आज कार्यक्रम का उद्घाटन केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने करते हुए पूर्व डकैतों को सम्मानित किया. स्व. सुब्बाराव की सौंपी विरासत को सहेजने और अहिंसक आंदोलनों के माध्यम से वंचितों, आदिवासियों के लिए जल-जंगल-जमीन की लड़ाई लड़ने वाले एकता परिषद के प्रमुख, सामाजिक कार्यकर्ता पी. वी. राजगोपाल के साथ मंच पर उन पूर्व दस्युओं को भी सम्मान मिला, जिनके नाम और बंदूकों की गरज से चंबल के बीहड़ कांपते थे. जौरा के इस आश्रम में देश भर से आए समाजसेवी, चिंतक, विचारक भी अविस्मरणीय पल के साक्षी बने हैं. जौरा के इस आश्रम में युवाओं को गांधीवादी विचार, अहिंसा की शक्ति, इतिहास के संघर्षों और मौजूदा मुद्दों से परिचित कराने के लिए युवा महोत्सव भी आयोजित किया गया है, जो 16 अप्रैल तक चलेगा. इसमें देश भर से आए करीब एक हजार युवा जौरा आश्रम में जुटे हैं.

किसने क्या कहा

इस मौके पर केन्द्रीय मंत्री तोमर ने कहा कि शांति और अहिंसा की ताकत बंदूक में नहीं है. कार्यक्रम में उपस्थित समाजवादी चिंतक रघुठाकुर ने कहा कि चंबल में न्याय और शांति के लिए शिक्षा और रोजगार की प्राथमिकता हो. प्रो. आनंद कुमार ने कहा कि दंगा फसाद मिटाने का रास्ता गांधीवाद में है.

क्या हुआ था 1972 में जौरा आश्रम में

बता दें कि 1972 में कुल 654 डकैतों ने आत्मसमर्पण किया था, उनमें से 450 डकैतों ने जौरा के महात्मा गांधी सेवा आश्रम में, 104 ने राजस्थान और 100 ने यूपी में एक साथ आत्मसमर्पण किया था. डकैतों का इतना बड़ा आत्म समर्पण 'न भूतो न भविष्यति' की मिसाल बन गया. डकैतों के इतने बड़े समर्पण की घटना दुनिया में आज तक कहीं नहीं हुई है. जौरा आश्रम की स्थापना गांधी वादी विचारक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एसएन सुब्बाराव ने की थी. डकैतों को समर्पण करने के लिए मनाने और उनमें विश्वास जगाने भाईजी के नाम से विख्यात सुब्बाराव ने कई महीने चंबल के बीहड़ों और गांवों की खाक छानी थी. उसके बाद जौरा के इस आश्रम में इतनी बड़ी संख्या में डकैतों का समर्पण संभव हुआ था. आत्मसमर्पण करने वाले डकैतों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए विनोबा भावे जी के भूदान आंदोलन में मिली जमीनें खेती-किसानी के लिए दी गई थी.

देश की आजादी के बाद पहली क्रांति

सामाजिक कार्यकर्ता पी. वी. राजगोपाल इसे देश की आजादी के बाद हुई आजादी की एक और लड़ाई और अहिंसक क्रांति कहते हैं. भाई जी का पिछले साल लंबी बीमारी के बाद 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया था. जौरा आश्रम में आयोजित स्वर्ण जयंती महोत्सव में मौजूद पूर्व दस्यु अजमेर सिंह, बहादुर सिंह और सोनेराम भी मौजूद थे. उन्होंने मंच से अपने बागी बनने, हथियार डालने और सामान्य जीवन में लौटने के बाद संघर्षों से जूझने के अनुभव साझा किए.

समारोह में शामिल आत्मसमर्पित बागी

70 के दशक के चम्बल के बागी सरगना सरू सिंह, माधो सिंह, मोहर सिंह, माखन-छिद्दा, हरबिलास सिंह व राजस्थान के रामसिंह गिरोह के सदस्य रहे आत्मसमर्पित बागी मानसिंह, मेहरबान सिंह, गंगा सिंह, संतोष सिंह, उम्मेद सिंह, रामभरोसी, घमण्डी सिंह, बूटा सिंह, अजमेर सिंह यादव, बहादुर सिंह कुषवाहा, सोबरन सिंह, सोनेराम, रामस्वरूप सिकरवार, तथा 80 के दषक के आत्मसमर्पित दस्यु रमेश सिंह सिकरवार, बाबू सिंह, प्रभु सिंह और राजस्थान आत्मसमर्पित महिला बागी कपूरी बाई समारोह में शामिल हुए। सभी आत्मसमर्पित बागियों को सम्मानित किया गया।

कोई अपनी मर्जी से बंदूक नहीं उठाता

कुछ पूर्व डकैतों और उनके परिजनों से चर्चा के दौरान उन्होंने कहा कि कोई अपनी मर्जी से बंदूक नहीं उठाता. हालात उसे ऐसा करने के लिए मजबूर करते हैं. उनका उत्पीड़न किया जाता है, इसलिए वह बागी बनकर बीहड़ों में कूद जाते हैं. ज्यादातर लोग बागी जमीनों की लड़ाई में बनते हैं, इसका उदाहरण पान सिंह तोमर है, जो भारतीय सेना में सिपाही था, लेकिन घर लौटने पर जमीन के विवाद में फंस जाता है और बंदूक उठाकर बीहड़ों में कूद पड़ता है. आत्मसमर्पण के 50 साल के महोत्सव में आए एक पूर्व दस्यु ने कहा कि आप स्कूल नहीं खोलते, पानी, बिजली, सड़क, रोजगार नहीं देते हैं, तो हालातों से भटका युवा छोटे-मोटे झगड़ों में पहले फंस जाता है, फिर बागी बन जाता है. आप सरकारी सिस्टम सुधारिये, कोई डकैत नहीं बनेगा. किसी को बीहड़ों में भटकना अच्छा नहीं लगता. एक पूर्व दस्यु के परिजन ने कहा कि डाकू मान सिंह, ददुआ, फूलन देवी, मलखान सिंह, मोहर सिंह, माधो सिंह, रमेश सिकरवार, निर्भय सिंह गुज्जर या हमारे घर के लोग क्या शौकिया डकैत बने. सब कहीं न कहीं, किसी न किसी अत्याचार के शिकार हुए हैं, सुनेंगे तो रोंगटे खड़े हो जाएंगे.

चंबल में दस्यु समर्पण के 50 साल

डकैतों की पीढ़ियां समाज में कैसे क्रांतिकारी बदलाव ला रही है

ग्वालियर। अजयभारत न्यूज

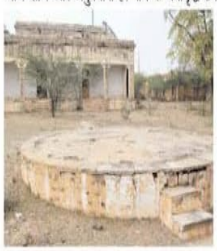

आज से 50 साल पहले जौरा तहसील के धौरेरा गांव में बागियों ने समर्पण के समय अपनी छावनी बना ली थी। गांव के पक्के मकानों को अपनी शरणगाह बनाया था। यहां अब स्कूल हैं, सड़कें हैं, बिजली है। जिस इलाके में बागियों के डर से कोई विकास कार्य नहीं होता था, अब उस इलाके में पगारा डैम पर गर्मियों में सैलानियों का तांता लगता है। यहां पेयजल परियोजना संचालित हो रही है। यहां वह पगारा कोठी भी है, जहां जेपी आकर रहे थे। लेकिन कोठी जीर्ण-शीर्ण और अनुपयोगी है। गांव के वयोवृद्ध रामेश्वर बताते हैं कि वह उस

समय 13 साल के थे। गांव को डकैतों ने खाली करवा लिया था। गांव के दो पक्के मकानों में से एक को माधौ सिंह और दूसरे को मोहर सिंह के गिरोह ने अपना ठिकाना बना लिया। गांव में डकैतों के ही डेरे थे। उन्हें याद है कि जौरा से गांव में पानी के टैंकर आते थे और बड़े-बड़े टेंट लगाकर यहां डाकुओं के लिए खाना बनता था। डाकुओं को देखने के लिए इतनी भीड़ आती थी कि सारा खाना खत्म हो जाता था। इसके बाद शांति मिशन के लोग वायरलेस सेट पर नगर पालिका को और टैंकर भिजवाने के संदेश देते थे। धौरेरा के रहने वाले वयोवृद्ध परिमाल ने बताया कि तब गांव में पक्की सड़क नहीं थी। नीचे डकैतों के कैंप थे, ऊपर पहाड़ी पर पगारा कोठी में जयप्रकाश नारायण रहते थे। डकैत गाड़ियों में भरकर गांधी जिंदाबाद, जेपी जिंदाबाद के नारे लगाते हुए जेपी से मिलने जाते थे। अब गांव बदल गया है। यहां स्कूल बन गए हैं। पक्की सड़कें हैं।

पुलिस को मिले थे विशेष निर्देश

ग्रामीण बताते हैं कि आज भी 50 घरों की बस्ती यहां है। पगारा कोठी के ठीक बगल से वाटर प्लांट लग गया है। हालांकि गांव में या पगारा कोठी पर समर्पण की घटना से जुड़ी कोई भी चीज संरक्षित नहीं है। करीब 85 साल के श्रीकृष्ण सिंह सिकरवार रिटायर्ड पुलिस प्रधान आरक्षक हैं। वे 1972 में आरक्षक हुआ करते थे और मुरैना मुख्यालय पर पदस्थ थे। उनकी ड्यूटी जौरा में लगाई गई। वे कहते हैं कि यह इलाका शांति क्षेत्र घोषित किया गया था। यहां पर किसी बागी की गिरफ्तारी न करने के आदेश उनके अधिकारियों को मिल चुके थे। सिकरवार के मुताबिक उन्हें और बाकी पुलिस कर्मियों को कहा गया था कि वे वर्दी पहनकर शांति क्षेत्र और समर्पण स्थल पर मौजूद न रहें। पुलिस यहां सादा कपड़ों में ही जाती थी। जौरा के पगारा रोड पर जहां दस्यु समर्पण हुआ, वहां आज भी वह चबूतरा है जहां गांधी की तस्वीर के सामने दस्युओं ने हथियार डाले थे।

समर्पण के दौरान घर-घर से अनाज मांगा

आश्रम की गतिविधि चलाने के लिए रन सिंह, राजगोपाल अन्य कार्यकर्ताओं के साथ घर-घर अनाज व दान मांगने जाते थे। बागियों के समर्पण के समय वे लोग स्वयंसेवक के तौर पर सारी व्यवस्था देखते थे। परमार कहते हैं कि 14 अप्रैल को जौरा के बागी समर्पण के 50 साल पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर एक कार्यक्रम आयोजित होगा। कार्यक्रम में समर्पित दस्यु, उनके परिवार और इन दस्युओं से पीड़ित रहे परिवारों के सदस्य एक मंच पर होंगे।

यह कार्यक्रम साबित करेगा कि किस तरह अहिंसा और सत्याग्रह के रास्ते पर चलकर बैर भुलाए जा सकते हैं। लोग किस तरह अपना बाकी जीवन शांति से जी सकते हैं। राजगोपाल समर्पण के गवाह रहे स्वयंसेवकों में से एक हैं। वे कहते हैं कि समर्पण का काम बहुत बड़ा था। इसका उद्देश्य केवल यह नहीं था कि डकैत समर्पण कर दें और काम खत्म। बड़ी चुनौती यह थी कि समर्पण के बाद शांति भी कायम रहे।

सुब्बाराव ने बिना सरकारी मदद के बदली गांव की तस्वीर

राजगोपाल ने बताया कि इस तरह के 500 से ज्यादा परिवार हैं, जो आसपास के इलाके में रहते हैं और आश्रम से खादी निर्माण, शहद उत्पादन जैसे कार्यों से रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। राजगोपाल ने बताया है कि इलाके के बागियों के परिवारों और आश्रम से जुड़े इलाके के लोगों की मदद से सुब्बाराव ने यहां कई ऐसे काम किए, जिन्हें चमत्कार ही कहा जा सकता है। बिना सरकारी मदद के सुब्बाराव ने इन लोगों के साथ मिलकर 23 गांवों में स्टाप डैम बनाए। बागचीनी गांव में क्वारी नदी पर पुल का निर्माण हुआ।

कुपोषण को दूर करने के लिए अभियान चला। लोगों को चरखा, कढ़ाई- बुनाई का प्रशिक्षण देकर रोजी कमाने लायक बनाया गया।

1995 में जयप्रकाश नारायण डिग्री कॉलेज खुला

स्थानीय सहयोगी जगदीश शुक्ला ने बताया कि 1995 में यहां पर शासन ने जयप्रकाश नारायण डिग्री कॉलेज खोला था। समर्पण की स्मृति में इस कॉलेज की स्थापना उसी मैदान पर की गई, जहां समर्पण हुआ। शुक्ला कहते हैं कि यह दुर्भाग्य है कि कुछ समय पहले इस कॉलेज का नाम बदल दिया गया है। अब इसे जौरा डिग्री कॉलेज नाम दिया गया है। समर्पण की याद में बने इस कॉलेज से बागियों के बच्चे, उनसे पीड़ित लोगों के बच्चों सहित इलाके के लाखों बच्चे डिग्रीधारी बन चुके हैं। एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष रन सिंह परमार ने बताया कि गांधी आश्रम की स्थापना के समय वे 16 साल के थे। सुब्बाराव जी उनके मार्गदर्शक थे। सुब्बाराव जी ने पहले बुधारा पोरसा में आश्रम शुरू किया। इसे बाद में जौरा की पगारा रोड पर स्थित दो पुराने कमरों में स्थानांतरित किया गया। इन कमरों में पहले चमड़े का काम होता था।

बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह

अहिंसक स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था से बनेगा हिंसामुक्त भारत-अनिल भाई

मुरैना। आदिवासी क्षेत्रों में स्वावलम्बन का कार्य चुनौतीपूर्ण रहा है। एकता परिषद के प्रयासों से भूमि अधिकार अभियान में वंचित समुदाय को भूमि के अधिकार से समाज अनाज के मामलों में स्वावलम्बी हुआ है। अहिंसक स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था से ही भारत हिंसामुक्त होगा। उक्त उद्गार जौरा आश्रम में बागी आत्मसमर्पण समारोह के दूसरे दिन राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में एकता परिषद के वरिष्ठ कार्यकर्ता अनिल भाई ने कही। एकता परिषद के वरिष्ठ कार्यकर्ता अनिल भाई श्योपुर के कुंडेश गांव से एक महिला की बातों का उदाहरण देते हुए कहा कि पहले उनको दबंग जाति के लोग कोड़ा कहते थे अभी उनको बुआ कहते है यह बदलाव आदिवासियों को भूमि का अधिकार मिलने और खेती किसानी करने से आत्मनिर्भर होने पर आया है। उन्होंने कहा कि सांकरा और रूधीपुरा में मधुमक्खी पालने से महिला समूह से जुड़ी महिलाएं आत्मनिर्भर होकर नई इबारत लिख रही हैं। महात्मा गांधी के अर्थव्यवस्था का केन्द्र गांव और ग्रामीण रहे हैं।

स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था मिलेगी शांति व न्याय

स्वराज्य व स्वावलम्बन के लिए जरूरी है सादगी-खुमानी

केरल से आये अनंतु जी ने कहा कि वर्तमान अर्थव्यवस्था लालची एवं हिंसक है। हिंसा पर आधारित अथवा उत्पादों के लाभ का विनियोग हिंसात्मक कार्यों में होने पर ऐसे उत्पादों का बहिष्कार करना चाहिए। श्री सुधीर भाई ने कहा कि हिंसा के आर्थिक, मानसिक और शारीरिक स्वरूपों को समझने की आवश्यकता है। श्री खुमानी ने कहा कि व्यक्तिगत जीवन शैली, विचार और व्यवहार में सादगी से समाज में अहिंसक तरीके से स्वावलम्बन पर कार्य किया जा सकता है। तमिलनाडु में जैविक खेती पर काम कर रहे श्रीधर लक्ष्मण ने कहा कि जैविक उत्पादों के बाजारीकरण के लिए कृषि उत्पादों को बाजार से जोड़ने की जरूरत है। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती गठबंधन से आयी सुश्री रिया ने कहा कि अर्थव्यवस्था में हिंसा और न्याय के तत्वों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। देश भर में बीज स्वावलम्बन के लिए कार्य हो रहा है। सम्मेलन के दूसरे सत्र की चर्चा शिक्षा पर केन्द्रित रही। इलाहबाद के प्रोफेसर प्रदीप शर्मा ने कहा कि महात्मा गांधी के स्वराज्य, स्वावलम्बन को पोषित करने के लिए शिक्षा नीति और कार्य होने चाहिए जिससे कि गांधी विचारों पर आधारित देश का निर्माण किया जा सके इसमें नवजवानों की महती भूमिका है। सत्र का संचालन जय जगत की अंतराष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती जिलकार हैरिस व एकता परिषद के महासचिव श्री रमेश शर्मा ने किया। सम्मेलन को बिहार के प्रदीप प्रियदर्शी, उड़ीसा की विष्णु बहन, मालवा से श्रद्धा बहन और चम्बल के जयसिंह ने सम्बोधित किया।

एकता अखण्डता के लिए भारत की संतान की प्रस्तुति

राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के दौरान भिन्न-भिन्न राज्यों से आये नवजवानों के समूह ने डा.एस.एन.सुब्बराव (भाई जी) की प्रमुख गतिविधि भारत की संतान की प्रस्तुति ने सभी दर्शकों और भागीदारों का मन मोह लिया। इसमें भारत की 18 भाषाओं में गीत की प्रस्तुति कश्मीरी-अंजु नेगी, उर्दु-तनिषा,हिंदी-राखी, सिंधी-राखी जलतारे, कन्नड-आदित्य कुमार, मलयालम-हेमराज, तमिल-चंदरू, तेलगू-राजू कुमार, कोंकणी-कृष्णा, मराठी-नेहा, उड़ीया-मंजू, आसामी-नयनतारा, बंगाली-बबन, नेपाली-गीता शर्मा , मणिपुरी-चिकी , गुजराती-कृष्णा बहन और संस्कृत-पंकज पारंपरिक वेशभूषा में नृत्य व भाषा गीत के साथ दी। भारत की संतान के निर्देशक नरेन्द्र बडगांवकर ने कहा कि भिन्न भाषा-भिन्न वेश होने के बावजूद भी अपना भारत एक देश है, यही हमारी मजबूत विशेषता है। तदोपरांत मधुभाई के साथ सभी प्रतिभागियों ने 'एक दुलारा-देश हमारा प्यारा हिंदुस्तान' गीत का सामूहिक गान कर सभी में देश भक्ति एकता व अखण्डता का जज्बा पैदा किया। झारखण्ड से आयी प्रख्यात गायिका श्रीमती मेघा डाल्टन ने गांधी जी पर केन्द्रित कई गीतों को देशज सुरू में प्रस्तुत कर वाहवाही लूटी। सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन उड़ीसा के सोमभाई और उत्तरप्रदेश की इति ने की। सम्मेलन में बिहार से आये साइकलिंग के अंतराष्ट्रीय खिलाड़ी श्री केशव पाण्डेय ने कहा कि देश के नवजवानों को राष्ट्रहित से जुड़े बड़े लक्ष्यों को सामने रखकर अनुशासित तरीके दृढ संकल्पित होकर आगे बढना चाहिए। देश को आगे ले जाने की जवाबदेही नवजवानों को है। सम्मेलन में उत्तरप्रदेश से आये युवा सामाजिक कार्यकर्ता श्री अजय कुमार पाण्डेय जी ने कहा कि जौरा सभी के लिए पवित्र भूमि है जहां के कण-कण में भाई जी दर्शन होता है। शांति की प्राप्ति युवाओं का भावनात्मक और क्रियात्मक लक्ष्य होना चाहिए तभी उनकी ऊर्जा, गतिशीलता और उत्साह राष्ट्रीय हित में समर्पित होगी। राष्ट्रीय युवा सम्मेलन की व्यवस्था की देख रेख कर रहे प्रफुल्ल भाई ने सभी प्रतिभागियो का स्वागत किया।

बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह

अहिंसक स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था से बनेगा हिंसामुक्त भारत-अनिल भाई

स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था मिलेगी शांति व न्याय स्वराज्य व स्वावलम्बन के लिए जरूरी है सादगी-खुमानी

- एड. दिनेश सिंह सिकरवार -

जौरा। आदिवासी क्षेत्रों में स्वावलम्बन का कार्य चुनौतीपूर्ण रहा है। एकता परिषद के प्रयासों से भूमि अधिकार अभियान में वंचित समुदाय को भूमि के अधिकार से समाज अनाज के मामलों में स्वावलम्बी हुआ है। अहिंसक स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था से ही भारत हिंसामुक्त होगा। उक्त उद्गार जौरा आश्रम में बागी आत्मसमर्पण समारोह के दूसरे दिन राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में एकता परिषद के वरिष्ठ कार्यकर्ता अनिल भाई ने कही। एकता परिषद के वरिष्ठ कार्यकर्ता अनिल भाई श्योपुर के बुढेरा गांव से एक महिला की बातों का उदाहरण देते हुए कहा कि पहले उनको दबंग जाति के लोग कीड़ा कहते थे अभी उनको बुआ कहते है यह बदलाव आदिवासियों को भूमि का अधिकार मिलने और खेती किसानी करने से आत्मनिर्भर होने पर आया है। उन्होने कहा कि सांकरा और रूम्रीपुरा में मधुमक्खी पालने से महिला समूह से जुड़ी महिलाएं आत्मनिर्भर होकर नई इबारत लिख रही हैं। महात्मा गांधी के अर्थव्यवस्था का केन्द्र गांव और ग्रामीण रहे हैं। केरल से आये अनंतु जी ने कहा कि वर्तमान अर्थव्यवस्था लालची एवं हिंसक है। हिंसा पर आधारित अथवा उत्पादों के लाभ का विनियोग हिंसात्मक कार्यों में होने पर ऐसे उत्पादों का बहिष्कार करना चाहिए। श्री सुधीर भाई ने कहा कि हिंसा के आर्थिक, मानसिक और शारीरिक स्वरूपों को समझने की आवष्यक्ता है। श्री खुमानी ने कहा कि व्यक्तिगत जीवन शैली, विचार और व्यवहार में सादगी से समाज में अहिंसक तरीके से स्वावलम्बन पर कार्य किया जा सकता है। तमिलनाडु में जैविक खेती पर काम कर रहे श्रीधर लक्ष्मण ने कहा कि जैविक उत्पादों के बाजारीकरण के लिए कृषि उत्पादों को बाजार से जोड़ने की जरूरत है। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती गठबंधन से आयी सुश्री रिया ने कहा कि अर्थव्यवस्था में हिंसा और न्याय के तत्वों पर ध्यान देने की आवष्यक्ता है। देष भर में बीज स्वावलम्बन के लिए कार्य हो रहा है। सम्मेलन के दूसरे सत्र की चर्चा षिक्षा पर केन्द्रित रही। इलाहाबाद के प्रोफेसर प्रदीप शर्मा ने कहा कि महात्मा गांधी के स्वराज्य, स्वावलम्बन को षोषित करने के लिए षिक्षा नीति और कार्य होने चाहिए जिससे कि गांधी विचारों पर आधारित देष का निर्माण किया जा सके इसमें नवजवानों की महती भूमिका है। सत्र का संचालन जय जगत की अंतराष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती जिलकार हैरिस व एकता परिषद के महासचिव श्री रमेष शर्मा ने किया। सम्मेलन को बिहार के प्रदीप प्रियदर्षी, उड़ीसा की विष्णु बहन, मालवा से श्रद्धा बहन और चम्बल के जयसिंह ने सम्बोधित किया। एकता अखण्डता के लिए भारत की संतान की प्रस्तुति - राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के दौरान भिन्न-भिन्न राज्यों से आये नवजवानों के समूह ने डा.एस.एन.सुब्बराव (भाई जी) की प्रमुख गतिविधि भारत की संतान की प्रस्तुति ने सभी दर्षकों और भागीदारों का मन मोह लिया। इसमें भारत की 18 भाषाओं में गीत की प्रस्तुति कष्मीरी-अंजु नेगी, उर्दु-तनिषा,हिंदी-राखी, सिंधी-राखी जलतारे, कन्नड-आदित्य कुमा?, मलयालम-हेमराज, तमिल-चंदरू, तेलगू-राजू कुमार, कोंकणी-कृष्णा, मराठी-नेहा, उड़िया-मंजु, आसामी-नघनतारा, बंगाली-बबन, नेपाली-गीता शर्मा , मणिपुरी-षिवांगी , गुजराती-कृष्णा बहन और संस्कृत-पंकज पारंपरिक वेभभूषा में नृत्य व भाषा गीत के साथ दी। भारत की संतान के निर्देषक नरेन्द्र बड़गा-वकर ने कहा कि भिन्न भाषा-भिन्न वेष होने के बावजूद भी अपना भारत एक देष है, यही हमारी मजबूत विषेषता है। तदोपरांत मधुभाई के साथ सभी प्रतिभागियों ने 'एक दुलारा-देष हमारा प्यारा हिंदुस्तान' गीत का सामूहिक गान कर सभी में देष भक्ति एकता व अखण्डता का जज्बा पैदा किया। झारखण्ड से आयी प्रख्यात गायिका श्रीमती मेघा डाल्टन ने गांधी जी पर केन्द्रित कई गीतों को देषज सुरू में प्रस्तुत कर वाहवाही लूटी। सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन उड़ीसा के सोमभाई और उत्तरप्रदेष की इति ने की। सम्मेलन में बिहार से आये साइकलिंग के अंतराष्ट्रीय खिलाड़ी श्री केषव पाण्डेय ने कहा कि देष के नवजवानों को राष्ट्रहित से जुड़े बड़े लक्ष्यों को सामने रखकर अनुषासित तरीके दृढ संकल्पित होकर आगे बढ़ना चाहिए। देष को आगे ले जाने की जवाबदेही नवजवानों को है। सम्मेलन में उत्तरप्रदेष से आये युवा सामाजिक कार्यकर्ता श्री अजय कुमार पाण्डेय जी ने कहा कि जौरा सभी के लिए पवित्र भूमि है जहां के कण-कण में भाई जी दर्षन होता है।

वर्ष : 07, अंक : 238 ग्वालियर, शुक्रवार 15 अप्रैल 2022 मूल्य : 1.00, पृष्ठ : 08

बागी आत्मसमर्पण की 50वीं वर्षगांठ पर समारोह

चंबल में शिक्षा व न्याय पर काम करना शांति के लिए जरूरी:ठाकुर

बाबा साहेब अंबेडकर के जीवन से महान कार्य करने की प्रेरणा मिलती है: तोमर

दंगा-फसाद मिटाने का रास्ता गांधीवाद में : प्रो. आनंद कुमार

जौरा। तमाम अपमान, विरोध और उपहास के बाद भी गांधी जी ने जीवन में सत्यधर्म का पालन किया और सत्यधर्म नहीं छोड़ा। भौतिक शरीर से बहुत सारे काम किये जाते हैं इसके साथ एक आत्मिक ताकत होती है और यही आध्यात्मिक ताकत व्यक्ति को सर्वमान्य और महान बनाती है। उनके शिष्य जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चम्बल में बागी आत्मसमर्पण का होना प्रेरणादायक घटना है और इसमें भाई जी डा.एस.एन. सुब्बराव का कार्य बहुत महत्वपूर्ण रहा। उक्त उद्गार बागी आत्मसमर्पण समारोह में मुख्य अतिथि केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कही।

प्रख्यात गांधीवादी और एकता परिषद के संस्थापक राजगोपाल पी.व्ही ने कहा कि चम्बल की घटना से देश व दुनिया में शांति व अहिंसा का संदेश गया। चम्बल की स्मृति से दुनिया को अहिंसा का संदेश जाना चाहिए।

समाजवादी चिंतक और पूर्व सांसद रघु ठाकुर ने कहा कि न्याय व शांति के लिए गांधी के तीन सूत्र 'चलो शहर से गांव की ओर', 'बड़े से छोटे की ओर' तथा 'मशीन से हाथ की ओर' पर काम करने की आवश्यकता है। चम्बल में शिक्षा और रोजगार पर काम करना न्याय व शांति के लिए जरूरी है। प्रख्यात समाजशास्त्री, अध्येता

व जवाहर लाल विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर आनंद कुमार ने कहा कि साम्प्रदायिक एकता के हजार सूत्र देने वाले शंकराचार्यों, मौलवियों और राजनेताओं के होने के बाद भी रामनवमी, होली और ईद के दिन देश में दंगा-फसाद होना चिंता का विषय है इसे जड़ से मिटाने का रास्ता केवल गांधीवाद में है। उन्होने कहा कि दंगा फसाद संसद और विधानसभा में नहीं होता बल्कि टोले और मुहल्ले में होता है इसलिए उसका रास्ता भी वहीं है। सांसद डा विकास महात्मने ने देश के राजनैतिक परिदृश्य में पारदर्शिता लाने के लिए चुनाव प्रक्रिया एवं प्रणाली में व्यापक सुधार की आवश्यकता पर बल दिया। समाजवादी चिंतक रामप्रताप ने कहा चम्बल का विकास पर्यावरणीय पर्यटन, शिक्षा एवं स्वावलम्बन पर ही निर्भर जिसमें युवाओं की सक्रिय भागीदारी करानी होगी। एक्शन विलेज इण्डिया एवं जय जगत के अंतराष्ट्रीय प्रतिनिधियों एस्टर (इग्लैण्ड) व जिल कार हैरिस (कनाडा) ने विचार व्यक्त कर शांति संदेश दिया।

भाई जी संस्कार पुरस्कार 2022

डा.एस.एन सुब्बराव (भाई जी) के नाम से सामाजिक कार्य के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार आंध्रप्रदेश के केयादव राजू, तमिलनाडु के करूनाकरण और महाराष्ट्र के नरेन्द्र बडगांवकर को प्रदान किया गया। इसमें उनको स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्रम् सहित संयुक्त रूप से एक लाख की धनराशि दी गयी। ज्ञात हो कि चम्बल घाटी में वर्ष 1970 में 14 अप्रैल को लोक नायक जयप्रकाश नारायण के समक्ष चम्बल के कुख्यात और दुर्दान्त बागियों ने गांधी जी के चित्र के समक्ष जौरा स्थित पुराने गांधी आश्रम में अपने हथियार डालकर समर्पण कर दिये थे। उनके समर्पण और पुनर्वास में डा.एस.एन सुब्बराव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। इस वर्ष बागी आत्मसमर्पण के 50 वर्ष पूरे होने पर महात्मा गांधी सेवा आश्रम व एकता परिषद द्वारा इसका आयोजन किया गया। सम्मेलन का संचालन महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सचिव रनसिंह परमार, रमेष शर्मा और राकेश दीक्षित ने किया। सम्मेलन में मैग्सेसे एवार्डी जलपुरूष राजेन्द्र सिंह, इलाहाबाद विष्वविद्यालय के प्रोफेसर प्रदीप शर्मा, समाजवादी पत्रकार जयंत तोमर, सर्वोदय मण्डल उत्तरप्रदेष के रामधीरज भाई राष्ट्रीय युवा योजना के न्यासी सुकुमारन, मधुभाई, श्योपुर के जयसिंह, कैलाष पराशर, एकता परिषद के महासचिव अनीश कुमार, सर्वोदय समाज परिषद के मनीश राजपूत, बिहार के सामाजिक कार्यकर्ता प्रदीप प्रियदर्शी, गांधी स्मृति दर्शन के रजनीश अरूणांचल के हरिविश्वास, बिहार के मुकेश, त्रिपुरा के देवाशीश, इण्डोनेशिया से आये प्रख्यात गांधीवादी और पद्मश्री से सम्मानित इन्दिरा उद्यन सहित देशभर के गांधीवादी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

समारोह में शामिल आत्मसमर्पित बागी

70 के दशक के चम्बल के बागी सरगना सरू सिंह, माधो सिंह, मोहर सिंह, माखन-छिद्दा, हरबिलास सिंह व राजस्थान के रामसिंह गिरोह के सदस्य रहे आत्मसमर्पित बागी मानसिंह, मेहरबान सिंह, गंगा सिंह, संतोष सिंह, उम्मेद सिंह, रामभरोसी, घमण्डी सिंह, बूटा सिंह, अजमेर सिंह यादव, बहादुर सिंह कुशवाहा, सोबरन सिंह, सोनेराम, रामस्वरूप सिकरवार, तथा 80 के दशक के आत्मसमर्पित दस्यु रमेश सिंह सिकरवार, बाबू सिंह, प्रभु सिंह और राजस्थान आत्मसमर्पित महिला बागी कपूरी बाई समारोह में शामिल हुए। सभी आत्मसमर्पित बागियों को सम्मानित किया गया।

बागी आत्मसमर्पण स्वर्ण जयंती समारोह के दूसरे दिन देश भर से आई हस्तियों ने की शिरकत

अहिंसक स्वावलंबी अर्थव्यवस्था से बनेगा हिंसामुक्त भारत

पत्रिका लाइव रिपोर्ट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

patrika.com

मुरैना. आदिवासी क्षेत्रों में स्वावलंबन का कार्य चुनौतीपूर्ण रहा है। एकता परिषद के प्रयासों से भूमि अधिकार अभियान में वंचित समुदाय को भूमि के अधिकार से समाज अनाज के मामलों में स्वावलंबी हुआ है। अहिंसक स्वावलंबी अर्थव्यवस्था से ही भारत हिंसा मुक्त होगा। गांधी सेवाश्रम जौरा में बागी आत्मसमर्पण जयंती समारोह के दूसरे दिन राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में एकता परिषद के अनिल भाई ने यह बात कही।

श्योपुर के बुढेरा गांव की एक महिला का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि पहले उनको दबंग जाति के लोग कीड़ा-मकोड़ा कहते थे, अब बुआ कहकर बुलाते हैं। यह बदलाव आदिवासियों को भूमि का अधिकार मिलने और खेती किसानी करने से आत्मनिर्भर होने पर आया है। सांकरा और रून्नीपुरा में मधुमक्खी पालने से महिला समूह से जुड़ी महिलाएं आत्मनिर्भर होकर नई इबारत लिख रही हैं।

मंच पर मौजूद अतिथि।

कार्यक्रम को संबोधित करते अतिथि।

लालची एवं हिसंक वर्तमान अर्थव्यवस्था

केरल से आये अनंतु ने कहा कि वर्तमान अर्थव्यवस्था लालची एवं हिसंक है। हिंसा पर आधारित अथवा उत्पादों के लाभ का विनियोग हिंसात्मक कार्यों में होने पर ऐसे उत्पादों का बहिष्कार करना चाहिए। सुधीर भाई ने कहा कि हिंसा के आर्थिक, मानसिक और शारीरिक स्वरूपों को समझने की आवश्यक्ता है। खुमानी ने कहा कि व्यक्तिगत जीवन शैली, विचार और व्यवहार में सादगी से समाज में अहिंसक तरीके से स्वावलंबन पर कार्य किया जा सकता है। तमिलनाडु में जैविक खेती पर काम कर रहे श्रीधर लक्ष्मण ने कहा कि जैविक उत्पादों के बाजारीकरण के लिए कृषि उत्पादों को बाजार से जोड़ने की जरूरत है। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती गठबंधन से आई रिया ने कहा कि अर्थव्यवस्था में हिंसा और न्याय के तत्वों पर ध्यान देने की आवश्यक्ता है। देश भर में बीज स्वावलंबन के लिए कार्य हो रहा है।

अखंडता के लिए भारत की संतान की प्रस्तुति

राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के दौरान डॉ.एसएन सुब्बाराव (भाइजी) की प्रमुख गतिविधि भारत की संतान के तहत भारत की 18 भाषाओं में गीत की प्रस्तुति दी गई। इनमें कश्मीरी-अंजु नेगी, उर्दु-तनिषा, हिंदी-राखी, सिंधी-राखी जलतारे, कन्नड-आदित्य कुमार, मलयालम-हेमराज, तमिल-चंदरू, तेलगू-राजू कुमार, कोंकणी-कृष्णा, मराठी-नेहा, उडीया-मंजू, आसामी-नयनतारा, बंगाली-बबन, नेपाली-गीता शर्मा, मणिपुरी-शिवांगी, गुजराती-कृष्णा बहन और संस्कृत-पंकज पारंपरिक वेभभूषा में नृत्य व भाषा गीत के साथ दी। भारत की संतान के निर्देशक नरेन्द्र बडगांवकर ने कहा कि भिन्न भाषा-भिन्न वेश होने के बावजूद अपना भारत एक देश है, यही हमारी मजबूत विशेषता है। इसके बाद मधुभाई के साथ सभी प्रतिभागियों ने 'एक दुलारा-देश हमारा प्यारा हिंदुस्तान' गीत का सामूहिक गान कर सभी में देष भक्ति एकता व अखण्डता का जज्बा पैदा किया।

शिक्षा पर केंद्रित रहा समारोह का दूसरा सत्र : सम्मेलन के दूसरे सत्र की चर्चा शिक्षा पर केन्द्रित रही। इलाहाबाद के प्रोफेसर प्रदीप शर्मा ने कहा कि महात्मा गांधी के स्वराज्य, स्वावलंबन को पोषित करने के लिए शिक्षा नीति और कार्य होने चाहिए, जिससे गांधी विचारों पर आधारित देश का निर्माण किया जा सके। इसमें नवजवानों की महती भूमिका है। सत्र का संचालन जय जगत की अंतराष्ट्रीय संयोजक जिलकार हैरिस व एकता परिषद के महासचिव रमेश शर्मा ने किया। सम्मेलन को बिहार के प्रदीप प्रियदर्शी, ओडीशा की विष्णु बहन, मालवा से श्रद्धा बहन और चम्बल के जयसिंह ने संबोधित किया।

बिहार से आए साइकिलिंग के अंतराष्ट्रीय खिलाड़ी केशव पांडेय ने कहा कि देश के नवजवानों को राष्ट्रहित से जुड़े बड़े लक्ष्यों को सामने रखकर अनुशासित तरीके दृढ़ संकल्पित होकर आगे बढ़ना चाहिए। सम्मेलन में उत्तरप्रदेश से आए युवा सामाजिक कार्यकर्ता अजय कुमार पाण्डेय जी ने कहा कि जौरा सभी के लिए पवित्र भूमि है। जहां के कण-कण में भाइजी दर्शन होता है। राष्ट्रीय युवा सम्मेलन की व्यवस्था की देख रेख कर रहे प्रफुल्ल भाई ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।

बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह

अहिंसक स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था से बनेगा हिंसामुक्त भारत

» स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था मिलेगी शांति व न्याय स्वराज्य व स्वावलम्बन के लिए जरूरी है सादगी

एक्सल समाचार, जौरा (एड दिनेश सिंह सिकरवार)। आदिवासी क्षेत्रों में स्वावलम्बन का कार्य चुनौतीपूर्ण रहा है। एकता परिषद के प्रयासों से भूमि अधिकार अभियान में वंचित समुदाय को भूमि के अधिकार से समाज अनाज के मामलों में स्वावलम्बी हुआ है। अहिंसक स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था से ही भारत हिंसामुक्त होगा। उक्त उद्गार जौरा आश्रम में बागी आत्मसमर्पण समारोह के दूसरे दिन राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में एकता परिषद के वरिष्ठ कार्यकर्ता अनिल भाई ने कही।

एकता परिषद के वरिष्ठ कार्यकर्ता अनिल भाई श्योपुर के बुढेरा गांव से एक महिला की बातों का उदाहरण देते हुए कहा कि पहले उनको दबंग जाति के लोग कीड़ा कहते थे अभी उनको बुआ कहते है यह बदलाव आदिवासियों को भूमि का अधिकार मिलने और खेती किसानी करने से आत्मनिर्भर होने पर आया है। उन्होंने कहा कि सांकरा और रूत्रीपुरा में मधुमक्खी पालने से महिला समूह से जुड़ी महिलाएं आत्मनिर्भर होकर नई इबारत लिख रही हैं। महात्मा गांधी के अर्थव्यवस्था का केन्द्र गांव और ग्रामीण रहे हैं। केरल से आये अनंतु जी ने कहा कि वर्तमान अर्थव्यवस्था लालची एवं हिसंक है। हिंसा पर आधारित अथवा उत्पादों के लाभ का विनियोग हिंसात्मक कार्यों में होने पर ऐसे उत्पादों का बहिष्कार करना चाहिए। श्री सुधीर भाई ने कहा कि हिंसा के आर्थिक, मानसिक और शारीरिक स्वरूपों को समझने की आवष्यक्ता है। श्री खुमानी ने कहा कि व्यक्तिगत जीवन शैली, विचार और व्यवहार में सादगी से समाज में अहिंसक तरीके से स्वावलम्बन पर कार्य किया जा सकता है। तमिलनाडु में जैविक खेती पर काम कर रहे श्रीधर लक्ष्मण ने कहा कि जैविक उत्पादों के बाजारीकरण के लिए कृषि उत्पादों को बाजार से जोड़ने की जरूरत है। राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती गठबंधन से आयी सुश्री रिया ने कहा कि अर्थव्यवस्था में हिंसा और न्याय के तत्वों पर ध्यान देने की आवष्यक्ता है। देष भर में बीज स्वावलम्बन के लिए कार्य हो रहा है।

समारोह • बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह के समापन पर बोले पीव्ही राजगोपालन

अब एकता परिषद घर-घर जाकर शुरू करेगी हर घर गांधी, हर घर संविधान अभियान

भास्कर संवाददाता | जौरा

बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह के समापन अवसर पर विगत तीन दिनों में हुई चर्चाओं के आधार पर तय किया गया कि परिवार, समाज, गांव-शहर और देश में शांति व न्याय की स्थापना के लिए हर घर गांधी-हर घर संविधान पहुंचाने के लिए व्यापक अभियान चलाया जाएगा। यह बात प्रख्यात गांधीवादी और सर्वोदयी नेता पीव्ही राजगोपालन राजू भाई ने कही। राजू भाई ने कहा कि समाज परिवर्तन में युवाओं की महती भूमिका है। न्याय और शांति के लिए नौजवानों को आगे आकर भाई जी के एकता, अखण्डता, भाईचारा, सांप्रदायिक सद्भावना के स्वप्न पर काम करने की जरूरत है। समापन समारोह के पूर्व सत्र में विभिन्न प्रांतों से आए प्रतिनिधियों ने भविष्य के कार्यों की रूपरेखा को प्रस्तुत किया।

जौरा गांधी सेवा आश्रम में मौजूद अतिथि व प्रतिभागी।

प्रख्यात सर्वोदयी नेता श्रीराम धीरज द्वारा 10 प्रस्ताव रखे, जिन्हें सर्वसम्मति से पारित किया गया। वहीं प्राकृतिक संसाधनों जल, जंगल और जमीन पर स्थानीय समुदाय का अधिकार और उसका उपयोग न कि दोहन, स्वावलंबन के लिए सामूहिक उपक्रमों कुटीर उद्योग धंधों को बढावा, स्थानीय स्तर पर विवादों का मेल-मिलाप से समाधान, गांव की कमाई गांव में ही रहे और ग्रामकोष की स्थापना का प्रयास, हर घर गांधी-हर घर संविधान की पहुंच, नशामुक्त भारत अभियान, प्रकृति व पर्यावरण की हर हाल में रक्षा, मन व समाज की शांति के लिए सर्वधर्म प्रार्थना आदि।

गांधी को केंद्र में रखकर चलाया जाए महाभियान: कुलकर्णी

पूर्व प्रधानमंत्री स्व अटल बिहारी बाजपेयी के राजनैतिक सलाहकार और प्रख्यात स्तंभकार सुधींद्र कुलकर्णी ने आजादी के अमृत महोत्सव पर आगामी 25 वर्षों के लिए जनता की भागीदारी के साथ गांधी को केंद्र में रखकर एक महाअभियान चलाए जाने की बात कही। उन्होंने कहा कि इस अभियान में गांधीवादियों को समाजवादियों, अंबेडकरवादियों, मार्क्सवादियों, संघियों, सभी राजनैतिक दलों से संवाद का सिलसिला शुरू करना चाहिए। ताकि सर्वसम्मति से अपना राष्ट्र उन्नत हो सके। प्रख्यात लेखक जगदीश शुक्ला द्वारा लिखित 'गांधीवाद के मंत्र से बदली चंबल की तकदीर' पुस्तक का विमोचन सुधींद्र कुलकर्णी द्वारा किया गया। इस मौके पर पूर्व विधायक महेश मिश्र, कैलाश मित्तल, रनसिंह परमार ने विभिन्न प्रांतों से आए प्रतिभागियों को अंगवस्त्रम् देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में प्रदीप प्रदर्शी, श्रद्धा कश्यप, महासचिव रमेश शर्मा, अनिल गुप्ता, सीताराम सोनवानी, मुरलीभाई, रामस्वरूप, ज्ञानाधार शास्त्री, प्रशांत भाई, अरूण, रविंद्र सक्सेना, रिया, दीपक अग्रवाल, सामाजिक कार्यकर्ता और पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष राकेश सिंह यादव आदि मौजूद थे।

बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह का समापन

हर घर गांधी और हर घर संविधान अभियान होगा प्रारंभ

» 'गांधीवाद के मंत्र से बदली चम्बल की तकदीर ' पुस्तक का विमोचन पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी बाजपेयी के राजनैतिक सलाहकार और प्रख्यात स्तंभकार लेखक सुधीन्द्र कुलकर्णी ने किया » आजादी के अमृत महोत्सव पर आगामी 25 वर्षों तक जनता की भागीदारी से गांधी को केन्द्र में रखकर एक महाअभियान चलाया जाना चाहिए

एक्सल समाचार, जौरा मुरैना (एड दिनेश सिंह सिकरवार) । बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह के समापन अवसर पर विगत तीन दिनों में हुई चर्चाओं के आधार पर तय किया गया कि परिवार, समाज, गांव-घहर और देष में शांति व न्याय की स्थापना के लिए हर घर गांधी और हर घर संविधान पहुंचानें के लिए व्यापक अभियान चलाया जायेगा। उक्त उद्गार प्रख्यात गांधीवादी और सर्वोदयी नेता श्री राजगोपाल पी.व्ही ने समापन समारोह में कही। प्रख्यात गांधीवादी और सर्वोदयी नेता श्री राजगोपाल पी.व्ही ने कहा कि समाज परिवर्तन में युवाओं की महती भूमिका है, न्याय और शांति के लिए नवजवानों को आगे आकर भाई जी के स्वप्न एकता, अखण्डता, भाई-चारा, साम्प्रदायिक सद्भावना पर काम की जरूरत है। समापन समारोह के पूर्व सत्र में विभिन्न प्रांतो से आये प्रतिनिधियों ने भविष्य के कार्यो की रूपरेखा को प्रस्तुत किया। प्रख्यात सर्वोदयी नेता श्री राम धीरज जी के द्वारा समारोह में 10 प्रस्तावों को रखा जिन्हें सर्वसम्मति से पारित किया गया। प्रस्तावों में प्राकृतिक संसाधनों जल, जंगल और जमीन पर स्थानीय समुदाय का अधिकार और उसका उपयोग न कि दोहन, स्वावलम्बन के लिए सामूहिक उपक्रमों कुटीर उद्योग धंधो को बढावा, स्थानीय स्तर पर विवादों का मेल-मिलाप से हल करना, गांव की कमाई गांव में ही रहे और ग्राम कोष की स्थापना का प्रयास, हर घर गांधी-हर घर संविधान की पहुँच, नषा मुक्त भारत अभियान, प्रकृति व पर्यावरण की हर हाल में रक्षा, मन व समाज की शांति के लिए सर्वधर्म प्रार्थना आदि का उल्लेख किया गया। स्वर्गीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के राजनैतिक सलाहकार और प्रख्यात स्तम्भकार श्री सुधीन्द्र कुलकर्णी ने आजादी के अमृत महोत्सव पर आगामी 25 वर्षों के लिए जनता की भागीदारी के साथ गांधी को केन्द्र में रखकर एक महाअभियान चलाया जाना चाहिए।

'प्रख्यात गांधी वादी विचारक'डा. एस. एन. सुब्बाराव'के जीवन दर्शन पर डाला प्रकाश

सेवरही।कुशीनगर।स्थानिय उपनगर मे राजेन्द्र प्रताप शाही सोशल एंड एजूकेशनल डेवलपमेंट सोसायटी के तत्वावधान मे प्रख्यात गाँधीवादी विचारक पद्म भूषण सम्मान से सम्मानित एक अनोखी संत आत्मा डा०एस एन सुब्बाराव को "बागी समर्पण की स्वर्ण जयन्ती "के अवसर पर याद कर गोष्ठी के माध्यम से उनके जीवन पथ दर्शन पर विस्तृत प्रकाश डाला गया।तथा उनका प्रिय भजन रघुपति राघव राजा राम,पतितपावन सीता राम,व वन्देमातरम गान हुआ।

उक्त अवसर पर सचिव रणबीर प्रताप शाही ने कहा कि सुब्बाराव भाई जी आजादी के सिपाही थे,लेकिन वे उन सिपाहीयो मे नही थे, जिनकी लड़ाई 15अगस्त 1947 को पुरी हो गयी । वे आजादी के उन सिपाहीयो मे थे कि जिनके लिए आजादी का मतलब लगातार बदलता है। 13साल की उम्र मे जेल जाना आन्दोलन मे कुद पडना 80 वर्षो तक देश, समाज ,राष्ट्र की सेवा की इस दौरान राष्ट्रहीत, नया भारत, महान भारत ,विश्वगुरू भारत, सुन्दर सुसज्जित, संस्कारित भारत बनाने की दिशा मे निरन्तर सेवा देते हुए 93 वर्ष की अवस्था मे हम सभी को छोड चले, किन्तु आज भी भारत ही नही अपितु विश्व भर के युवा एवं उनके प्रेमी आज भी उन्हे याद कर अपने बिच महसूस करते है।

सुब्बाराव भाई जी के शिष्य प्रेम शंकर सिंह सूर्यवंशी ने उनके अनगिनत प्रसंगों को बताने के क्रम मे एक घटना का जिक्र करते हुए कहा कि 1970के पूर्व चंबल

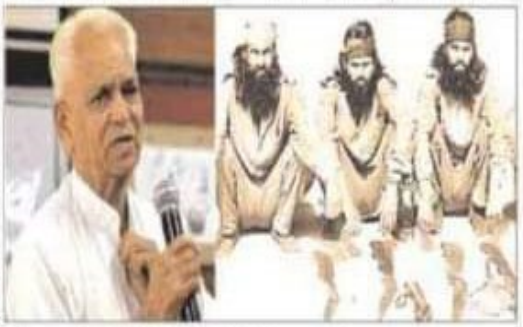

घाटी डकैतो के गोलियो के गूंज व आतंक का प्रयाय बन चुका था सरकार और जनता दोनो त्रस्त थे उस समय पहल कर गाधीवादी संत सुब्बाराव की मेहनत रंग लाई और 14अप्रैल 1972को गाँधी सेवा आश्रम जौरा मे समाजवादी नेता जयप्रकाश नरायण एवं उनकी पत्नी प्रभा देवी के सामने डकैतो का सामूहिक आत्मसमर्पण कराया था,इनमे से बडी संख्या मे डकैतो ने जौरा के आश्रम और 100डकैतो ने मुरैना से लगे राजस्थान के जिला धौलपुर मे गाधी जी की तस्वीर के सामने सरेन्डर किया था।इस प्रकार हृदय परिवर्तन कर कुल 672 डकैतो का आत्म समर्पण कराकर उन्होने एक रिकार्ड कायम कर चंबल को आतंक मुक्त कराया तथा पुरे क्षेत्र को रोजगार ,विकाश,शान्ति,की कडी से जोडने का काम किया। सुब्बाराव को प्यार से भाई जी कहकर सभी लोग बुलाते थे,उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा को समर्पित कर दिया था,आज उस आत्मसमर्पण के 50वर्ष पुरे होने पर उसी स्थान पर गाधी सेवा आश्रम जौरा,मुरैना,म०प्र०,मे तीन दिवसीय बागी समर्पण की स्वर्ण जयन्ती मनाई जा रही है जिसमे समर्पण के बागी उनका परिवार एवं सम्पूर्ण भारत से युवा पहुचकर उन्हे एवं उस पल को याद कर जयन्ती मना रहे है एवं उसी क्रम मे हम सभी भी उन्हे याद कर भाई जी के पद चिन्हो सद मार्गो पर चलने का प्रयास कर रहे है। उक्त कार्यक्रम मे रजनीश तिवारी,अरविन्द यादव,संतोष मिश्रा, संतोष पटेल,रितिक मिश्रा,राजबहादुर सिंह, मनोज श्रीवास्तव, एडवोकेट पुष्करनाथ श्रीवास्तव, आनन्द मिश्र,गनेस गुप्ता आदि लोगो ने अपने विचार रखे।

Chambal village marks 50 yrs of 1st mass surrender of dacoits

Shruti Tomar and Shiv Pratap Singh
letters@hindustantimes.com

BHOPAL: In the first week of April 1972, the residents of the tiny village of Dhorera, 36km from Madhya Pradesh's Morena, left their homes. Bags and children on their shoulders, they put locks on their doors, and took all they could carry -- some on foot, some on bullock carts. Fleeing was not unusual in the area. These were, after all, the ravines of Chambal where dacoits, guns and murder were intrinsic to everyday life. Yet, this was different. It was not a flight sparked by fear; it was a temporary exodus for peace.

As the families left, new inhabitants came in. The homes were unlocked, and tents were set up, by people from the district administration, politicians, social activists, and police personnel. Then arrived some unprecedented, but not unfamiliar, visitors. More than a hundred dreaded dacoits entered the village with guns slung across their bodies. The state and the dacoits had hunted each other until then. Now they were trying to negotiate a surrender.

About a week later, on April 14, 1972, more than 200 dacoits surrendered in Dhorera. It was the first such mass surrender in Chambal, and was led by dacoits Mohar Singh and Madho Singh. The former, carrying a reward of ₹3 lakh on his head and accused of 85 murders, lay down arms with more than 80 men. The latter — carried a reward of ₹1 lakh — surrendered with 12. There were 10 other smaller dacoit gangs that surrendered, too, all shouting slogans in praise of Mahatma Gandhi, and social activists Vinobha Bhave and Jai Prakash Narayan.

Fifty years later, on April 14, civil society activists and some of the former dacoits will return to Dhorera to commemorate that seminal day five decades ago, and to relive a journey that finally brought some semblance of peace to the ravaged region.

Years of back-channel talks

The final touches may have come in Dhorera in 1972, but the surrender was years in the making, according to people who have studied and tracked Chambal's dark days.

PICK OF THE DAY

"The first initiative for the surrender was taken by Vinoba Bhave in 1960 on the request of Tehsildar Singh, the son of dacoit Man Singh. Tehsildar was in Naini jail, and wrote a letter to Bhave seeking a permanent solution. Bhave had advocated a surrender for dacoits, and in a famous speech on the banks of the Chambal river in May 1960 said that these dacoits were better than the ones (a reference to corruption) sitting in Delhi," said Jayant Singh, a professor of journalism at ITM, Gwalior who followed the stories of Chambal's dacoits.

After the letter, there were intermittent conversations between the government and activists around questions of surrender but these faded into the background, overtaken by broader political events such as the death of Prime Minister Jawaharlal Nehru in 1964.

Ten years later, Madho Singh reached out to Bhave and Narayan. The negotiations could not have come at a better time. Chambal was deep in the throes of violence. From the late 1950s to the mid-1970s, there were at least 700 dacoit gangs operating in six districts in MP, four districts in Rajasthan, and six districts in Uttar Pradesh, Jayant Singh said.

The topography of the ravines made it fertile ground for the operation of these gangs. The soft soil allowed only for movement on foot, or on horses and camels, which the police found difficult to navigate. A former state police services officer KD Sonakiya said, "The structure of the ravines changes every monsoon, so it was difficult for police to have a clear map they could use to chase the dacoits."

Retired deputy inspector general of police, Hari Singh Yadav, who spent 13 years of his service in the ravines, said, "In the 1960s, dacoits increased due to a perceived sense of injustice. When people faced atrocities, they would join the dacoits. The sardar (chief) would give them guns and manpower, which they used to exact revenge, and in turn would join the gang. These gangs sustained themselves through abduction and extortion."

In early 1971, Narayan deputed the Chambal Ghati Shanti mission, an organisation of 50 social activists, to begin negotiations with a clutch of infamous gang leaders including Mohar Singh, Tilak Singh, Saru Singh, and Badla Ram, among others. Eventually, the negotiations were whittled down to two primary conditions. One, the surrendering dacoits would not be given the death sentence for their crimes; and two, after they completed their jail terms, they would be given three acres of agricultural land. Narayan often joined these negotiations, and proposed the idea of an "open jail" for dacoits, the first of which was set up in Mungaoli in Ashok Nagar district. Eventually, there was a breakthrough with Mohar Singh.

Over 200 dacoits surrendered in Dhorera in April 1972. HT ARCHIVE

Singh, who died in 2020 in Bhind, would often say that when Narayan informed then prime minister Indira Gandhi that a deal was done, she said she would allow it only if Mohar Singh surrendered. "Even Prime Minister was concerned about me," he said in an interview with HT in 2019.

The Dhorera surrender

Even during the negotiations, the trust was still fragile. Singh asked that a village be vacated for the dacoits and their families to stay together as final touches were being ironed out. Dhorera, with 40 homes, was picked because of its proximity to the Mahatma Gandhi Sewa Ashram in Jaura, and the Pagar Kothi where Narayan lived. On the order of then MP chief minister Prakash Chand Sethi, police declared the whole area a "peace zone" where dacoits were allowed to roam freely.

Retired constable Shri Krishna Singh Sikarwar, now 85, was one of the 2,000-odd MP police personnel posted at the village. "It was an unusual moment for us because we were welcoming the dacoits to the peace zone, the same people we had been chasing for so many years," he said.

Initially, the administration expected only the Mohar Singh and Madho Singh gangs to surrender, but as word spread, at least 10 other gangs wanted to lay down arms as well. "The negotiators had to quickly call for extra ration and water tankers because there was always the chance of clashes breaking out if there was mismanagement," said Sikarwar.

Ajmer Singh, now an 85-year-old farmer, was part of the Mohar Singh gang. "I surrendered when I was 35. It was like the freedom movement for us. We were afraid because it would have been easy for police to kill us in a fake encounter. But we trusted Jai Prakash Narayan. Because our numbers were so high, the police took two days to complete the process of arrests. I was housed in Mungaoli jail."

For the villagers of Dhorera, the temporary shift was a chance to be a part of history. Parimal Singh Kansana shifted to the village of Kashipur for 10 days. It was his pucca home, one of two in the village, that Mohar Singh occupied. "All the women and children moved to their maternal homes for two weeks while some men, including my father stayed behind to help the district administration," Kansara, now 68, said.

He added that the village did not have a relationship of fear with the dacoits, grateful as they were for their support of the poor. "We were not afraid of the dacoits because they only punished zamindaars and businessmen."

For some, though, memories attached to the dacoits were less pleasant, and they were less enthused about the negotiations. Gangaram Gupta, from Dhamkana village in Morena, was seven when he was kidnapped by the Barelal gang. "I went through torture for 24 days. The dacoits threw me from a camel. My father paid ₹5,000 as ransom. When the gang surrendered, without any real punishment, it pained me. But we told ourselves this would bring peace for our families."

What happened to the dacoits

The mass surrender of 1972 opened the floodgates for more such over the next few years. By 1985, a total of 654 dacoits had surrendered, official data shows. Retired director general of police DC Jugran, who was the Morena police superintendent in 1972, said, "In the decade after the surrender, there was a lot of pressure on dacoits. There were encounters, and as numbers went down, more and more wanted to give up arms."

Malkhan Singh, for instance, surrendered in Bhind in July 1982 in front of 10,000 people. Phoolan Devi surrendered in February 1983 in Bhind.

Most dacoits served imprisonment of eight to 10 years, and when they came out, had to construct entirely new lives. The Gandhi Ashram in Dhorera, set up in 1969, played a key role in the reconciliation by finding ways for surrendered dacoits to integrate. "The big challenge was to maintain peace after the surrender. Those who suffered due to the dacoits could easily have developed feelings of revenge. That is why SN Subbarao started humanitarian activities from the Ashram. At its peak, as many 80 dacoits were with the ashram," said social reformer Rajagopal PV, one of the people involved in the ashram.

As the dacoits pivoted to a life outside of crime, one arena that welcomed the most influential among them was politics. For years, they had run quasi governments, and this meant a ready-made catchment of support that came with these leaders. Mohar Singh joined the Congress and won the Mehgaon municipality election in 1995. Phoolan Devi rose to become an MP from Mirzapur in UP twice before she was assassinated in 2001. Tehsildar Singh, who first wrote to Bhave proposing the mass surrender in 1960, fought Mulayam Singh as a Bharatiya Janata Party candidate from Jaswant Nagar in 1991, but lost.

Shadow of violence

Fifty years may have passed, and the dacoits have long lost their influence, but the shadow of a culture of violence still looms. A Madhya Pradesh home ministry report says that in 2020, the state issued 250,000 gun licenses. Of these, 30% were in three districts -- Gwalior (30,500), Bhind (22,000) and Morena (23,000). IPS officer Manoj Kumar Singh, who was posted in Bhind in 2020, said, "Beyond these, about 150 murders were committed using illegal arms between 2016 and 2020. The illegal arms business feeds off the legal arms licenses, because ammunition is in plentiful supply."

For police personnel on the ground, a subculture where every folk tale is about gun-wielding dacoits has grave ramifications. In his last posting in the district of Rajgarh, Pawan Singh Bhadoriya registered only one case under the arms act in over a year. Now town inspector of the Sihoniya police station for just seven months, he has already logged 20 cases. "The youngsters have started taking to social media to show off their collection of arms. Here, owning a weapon is a matter of pride."

Between April 13 and April 15, in an event organised by the Gandhi ashram and the Ekta Parishad, at least 30 surrendered dacoits and their families will arrive in Dhorera to commemorate the day of the first mass surrender. The "golden jubilee" is set to take place at Jayaprakash Narayan Degree College — inaugurated in 1995 on the same piece of land where the surrender agreement was reached on April 14, 1972.

50 YRS OF SURRENDER OF CHAMBAL DACOITS

'Self-centric mindset responsible for violence, injustice & inequality'

650 YOUTHS FROM 30 STATES GATHER AT JOURA FOR 5-DAY YOUTH CAMP

OUR STAFF REPORTER
city.bhopal@fpj.co.in

Gandhian Ramdhiraj has said that evils like injustice, violence, and inequality increase in the society due to self-centric approach.

Therefore, if the younger generation wants a better society, then one has to work for and think about the welfare of others. This is what Sarvodaya is all about, he added.

Ramdhiraj was speaking on the inaugural day of a five-day 'Youth for Peace and Justice Camp' at Joura in Morena district on Tuesday. Mahatma Gandhi Seva Ashram Joura and National Youth Scheme organised the camp to mark the 50th anniversary of the surrender of Chambal dacoits.

He said that the impact of climate change is the most on the common man. Due to untimely and excessive rainfall and drought, the majority of people dependent on agriculture and the poor labourers are facing challenges. By planting trees, the earth can be made green and the environment can be enriched by water conservation and harvesting.

Around 650 youth from 30 states of the country have taken part in the camp.

President of Mahatma Gandhi Seva Ashram Joura, Ransingh Parmar said that the burden of society and nation is on the shoulders of the young generation. "Every young person should work on 'Ek Ghanta Deh Ko-Ek Ghanta Desh Ko' by taking inspiration from Subbarao's life," he said.

Sunil from Thiruvananthapuram said that he had heard and read about the surrender of dacoits and it is a matter of pride for him to meet the surrendered dacoit Bahadur Singh and get to know about his thoughts.

Kalyani Sarkar from West Bengal, said that if she can do something for society by taking inspiration from Subbarao then her life will be blessed. Trustee of National Youth Scheme Sukumaran from Kerala said that connecting with the youth was important.

Young social worker and trustee of Rayuyo, sang a song titled 'Hindi Hai Hum Karod-Karod...'. Youth participated in sessions related to yoga, collective Shramdaan and national flag hoisting.

Professor Anand Kumar from Jawaharlal Nehru University, thinker and former MP Raghu Thakur will participate and present the ideas in the event.

ଚମ୍ବଲ ଦସ୍ୟୁମାନଙ୍କ ଆତ୍ମସମର୍ପଣର ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣଜୟନ୍ତୀ

ମୋରେନା, ୧୬/୦୪ (ଇମିସ): ଚମ୍ବଲ ଦସ୍ୟୁମାନଙ୍କ ଆତ୍ମସମର୍ପଣର ୫୦ ବର୍ଷ ପୂର୍ତ୍ତି ଉତ୍ସବ ମଧ୍ୟପ୍ରଦେଶ ମୋରେନା ଜିଲ୍ଲାର ଜୌରାଠାରେ ପାଳିତ ହୋଇଯାଇଛି। ଏପ୍ରିଲ୍ ୧୪ ତାରିଖର ସେହି ସ୍ମରଣୀୟ ଦିବସରେ ଆତ୍ମସମର୍ପଣକାରୀଙ୍କ ସ୍ମୃତିରେ ଏକ ଭବ୍ୟ ଉତ୍ସବ ଜୌରାସ୍ଥିତ ମହାତ୍ମାଗାନ୍ଧୀ ସେବା ଆଶ୍ରମ ପରିସରରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଯାଇଛି। ଜଣାଶୁଣା ସମାଜସେବୀ ପି.ଭି. ରାଜଗୋପାଳ ଓ ସେବା ଆଶ୍ରମର ସଂଞ୍ଚାଳକ ରଣସିଂହ ପରମାରଙ୍କ ନେତୃତ୍ୱରେ ଦେଶର ୨୩ଟି ରାଜ୍ୟର ଗାନ୍ଧୀବାଦୀମାନେ ଏକଜୁଟ ହୋଇ ୧୯୭୨ ମସିହାର ସେଇ ଐତିହାସିକ ମୁହୂର୍ତ୍ତର ସ୍ମୃତିଚାରଣ କରିଛନ୍ତି। ଲୋକନାୟକ ଜୟପ୍ରକାଶ ନାରାୟଣ ଓ ଏସ୍.ଏନ୍. ସୁବାରାଓଙ୍କ ଆଦର୍ଶରେ ପ୍ରଭାବିତ ହୋଇ ଔପଚାରିକ ଭାବେ ଚମ୍ବଲ ଦସ୍ୟୁମାନେ ନିଜନିଜର ବନ୍ଧୁକ ତ୍ୟାଗ କରି ସାଧାରଣ ଜୀବନଯାପନ ଆରମ୍ଭ କରିଥିଲେ।

ସୁବାରାଓ ଓରଫ ଭାଇଜୀ ୧୯୬୪ ମସିହାରେ ଚମ୍ବଲର ଜୌରା ଗାଆଁରେ ୧୦ ମାସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଶିବିର ଚଳାଇଥିଲେ। ଏହି ପ୍ରୟାସର ଫଳ ସ୍ୱରୂପ ୧୯୭୨ରେ କୁଖ୍ୟାତ ଦସ୍ୟୁ ମୋହର ସିଂହ ଓ ମାଧୋ ସିଂହଙ୍କ ସମେତ ୧୨ ଜଣ ଦସ୍ୟୁ ଆତ୍ମସମର୍ପଣ କରିଥିଲେ। ଏହିପରି ଭାବେ ପଛକୁ ପଛ ସମୁଦାୟ ୬୫୪ ଜଣ ଦସ୍ୟୁ ବନ୍ଧୁକ ଓ ହିଂସା ଛାଡ଼ି ସମାଜର ମୁଖ୍ୟ ଧାରାରେ ସାମିଲ ହୋଇ ଶାନ୍ତିମାର୍ଗକୁ ଧରିଥିଲେ। ଏ ଘଟଣାକ୍ରମ ଦେଶବିଦେଶରେ ଚହଳ ସୃଷ୍ଟି କରିଥିଲା। ୫୦ ବର୍ଷ ମଧ୍ୟରେ ସେହି ଆତ୍ମସମର୍ପଣକାରୀ ଦସ୍ୟୁମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରୁ ଅନେକଙ୍କ ମୃତ୍ୟୁ ଘଟିଲାଣି। ଜୀବିତ ଥିବା ୧୮ ଜଣ ଆତ୍ମସମର୍ପଣକାରୀ ନାଗରିକଙ୍କୁ ୧୪ ଏପ୍ରିଲ ଗୁରୁବାର ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧିତ କରାଯାଇଛି। ଅହିଂସା ଓ ଶାନ୍ତି ପାଇଁ ଗାନ୍ଧିବାଦ ବିଶ୍ୱାସୀ ବିଭିନ୍ନ ବୟସର ହଜାରେ ଜଣରୁ ଅଧିକ ମହିଳା ଓ ପୁରୁଷ ଏକ ସମ୍ମିଳନୀରେ ଏକାଠି ହୋଇ ସ୍ୱରାଜ, ସ୍ୱାବଲମ୍ବନ ଓ ଶିକ୍ଷା ବିଷୟରେ ଚର୍ଚ୍ଚା କରିଥିଲେ। ଏହି ସମ୍ମିଳନୀରେ ମୋରେନା ଲୋକସଭା ସଦସ୍ୟ ତଥା କେନ୍ଦ୍ର କୃଷିମନ୍ତ୍ରୀ ନରେନ୍ଦ୍ର ସିଂହ ତୋମାର ମୁଖ୍ୟ ଅତିଥି ଭାବେ ଯୋଗଦେଇଥିଲେ।

ତିନିଦିନିଆ ସମ୍ମିଳନୀ ୧୬ ଏପ୍ରିଲ୍ ଶନିବାର ଉଦ୍‌ଯାପିତ ହୋଇଯାଇଛି। ଏହି ଅବସରରେ ଭାଇଜୀଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ଜାତୀୟ ଯୁବ ପ୍ରକଳ୍ପର ଏ ତିନିଦିନିଆ ଯୁବ ତାଲିମ ଶିବିର ଅନୁଷ୍ଠିତ ହେବା ସହ ପି.ଭି. ରାଜଗୋପାଳଙ୍କ ''ଏକତା ପରିଷଦ''ର ଏକ ସମ୍ମିଳନୀ ଉଦ୍‌ଯାପିତ ହୋଇଯାଇଛି।

बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह का समापन

- एड. दिनेश सिंह सिकरवार

जौरा मुरैना। बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह के समापन अवसर पर विगत तीन दिनों में हुई चर्चाओं के आधार पर तय किया गया कि परिवार, समाज, गांव-घर और देष में शांति व न्याय की स्थापना के लिए हर घर गांधी और हर घर संविधान पहुँचानें के लिए व्यापक अभियान चलाया जायेगा। उक्त उद्गार प्रख्यात गांधीवादी और सर्वोदयी नेता श्री राजगोपाल पी.व्ही ने समापन समारोह में कही। प्रख्यात गांधीवादी और सर्वोदयी नेता श्री राजगोपाल पी.व्ही ने कहा कि समाज परिवर्तन में युवाओं की महती भूमिका है, न्याय और शांति के लिए नवजवानों को आगे आकर भाई जी के स्वप्न एकता, अखण्डता, भाई-चारा, साम्प्रदायिक सद्भावना पर काम की जरूरत है। समापन समारोह के पूर्व सत्र में विभिन्न प्रांतो से आये प्रतिनिधियों ने भविष्य के कार्यो की रूपरेखा को प्रस्तुत किया।

प्रख्यात सर्वोदयी नेता श्री राम धीरज जी के द्वारा समारोह में 10 प्रस्तावों को रखा जिन्हे सर्वसम्मति से पारित किया गया। प्रस्तावों में प्राकृतिक संसाधनों जल, जंगल और जमीन पर स्थानीय समुदाय का अधिकार और उसका उपयोग न कि दोहन, स्वावलम्बन के लिए सामूहिक उपक्रमों कुटीर उद्योग धंधो को बढावा, स्थानीय स्तर पर विवादों का मेल-मिलाप से हल करना, गांव की कमाई गांव में ही रहे और ग्राम कोष की स्थापना का प्रयास, हर घर गांधी-हर घर संविधान की पहुँच, नषा मुक्त भारत अभियान, प्रकृति व पर्यावरण की हर हाल में रक्षा, मन व समाज की शांति के लिए सर्वधर्म प्रार्थना आदि का उल्लेख किया गया। स्वर्गीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के राजनैतिक सलाहकार और प्रख्यात स्तम्भकार श्री सुधीन्द्र कुलकर्णी ने आजादी के अमृत महोत्सव पर आगामी 25 वर्षो के लिए जनता की भागीदारी के साथ गांधी को केन्द्र में रखकर एक महाअभियान चलाया जाना चाहिए। अभियान के तहत गांधीवादीयों को समाजवादियों, अम्बेडकरवादियों, माक्सवादियों व संघीयों और सभी राजनैतिक पार्टीयों से संवाद का सिलसिला प्रारंभ करना चाहिए ताकि सर्वसम्मति अपना राष्ट्र उन्नति कर सके। प्रख्यात लेखक और पत्रकार श्री जगदीष शुक्ला जी के द्वारा लिखित 'गांधीवाद के मंत्र से बदली चम्बल की तकदीर' पुस्तक का विमोचन श्री सुधीन्द्र कुलकर्णी द्वारा किया गया।

समापन समारोह के अवसर पर जौरा के अनुविभागीय अधिकारी श्री विनोद सिंह ने कहा कि सभी नवजवान यह संकल्प ले कि गांधी और समारोह की चर्चाओं को अपने गांव-घर और परिवार में लेकर जायेंगे। पुलिस अनुविभागीय अधिकारी श्री मानवेन्द्र सिंह ने कहा कि गांधी आज बहुत ही प्रासंगिक हैं। एकता परिषद मध्यप्रदेष के प्रदेष संयोजक श्री डोंगर शर्मा ने लोगों को एकजुट कर उनकी समस्याओं के समाधान के लिए अहिंसक आंदोलन के लिए अपील की। पूर्व विधायक श्री महेष मिश्रा जी ने युवाओं को देष की हालात बदलने के लिए अपील की। उन्होने कहा कि आठ वर्ष पहले देष में गरीब परिवारों की संख्या 32 करोड़ से बढ़कर 81 करोड़ होना आष्चर्य किंतु सत्य है, इस तरह के प्रकल्प की आवष्यक्ता पर बल दिया जिससे गरीबी को समाप्त किया जा सके। आयोजन समिति की ओर से श्री कैलाष मित्तल जी ने सभी आगन्तुकों को धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह के समापन सत्र में अलग-अलग राज्यों से आये प्रतिभागियों को महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सचिव श्री रनसिंह परमार ने अंगवस्त्रम् देकर सम्मानित किया और उनकी हौसला आफजाई की। एकता परिषद के राष्ट्रीय संयोजक प्रदीप प्रियदर्षी व श्रद्धाकष्यप, महासचिव रमेष शर्मा, अनिल गुप्ता, सीताराम सोनवानी, मुरली भाई, रामस्वरूप, ज्ञानाधार शास्त्री, प्रषांत भाई, अरूण जी, रविन्द्र सक्सेना, रीया, दीपक अग्रवाल, सामाजिक कार्यकर्ता और पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष श्री राकेश सिंह यादव इत्यादि को उनके समूह के साथ और प्रख्यात गांधीवादी लोक गायिक झारखण्ड की श्रीमती मेघा डाल्टन को श्री राजगोपाल पी व्ही, जिलकार हैसिव अनुविभागीय अधिकारी द्वारा सम्मानित किया गया। समारोह की व्यवस्था से जुड़े अलग-अलग विभागों पंजीयन, भोजन, आवास, पानी, स्वच्छता, सुरक्षा, दस्तावेजीकरण के प्रतिनिधियों को भी श्री प्रफुल्ल श्रीवास्तव की अगुवाई मे सम्मानित किया गया। जिसमें उदयभान सिंह, सुमिल शर्मा, लक्ष्मीनारायण, संतोष सिंह, कुलदीप तिवारी, सुनिल, डोंगर शर्मा, संजय जादौन, देवा, श्याम, सागर, आनंद सोनी और रा-रूट्स प्रोडक्षन के युवा इत्यादि लोग शामिल थे।

- ❖ 'गांधीवाद के मंत्र से बदली चम्बल की तकदीर' पुस्तक का विमोचन पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी बाजपेयी के राजनैतिक सलाहकार और प्रख्यात स्तंभकार लेखक श्री सुधीन्द्र कुलकर्णी ने किया।
- ❖ आजादी के अमृत महोत्सव पर आगामी 25 वर्षों तक जनता की भागीदारी से गांधी को केन्द्र में रखकर एक महाअभियान चलाया जाना चाहिए :सुधीन्द्र कुलकर्णी
- ❖ हर घर गांधी और हर घर संविधान अभियान होगा प्रांरभ-राजगोपाल पी.व्ही

हर घर गांधी और हर घर संविधान अभियान होगा प्रारंभः राजगोपाल पीवी

बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह का समापन

मुरैना/जौरा ■ राज न्यूज नेटवर्क

बागी आत्मसमर्पण की स्वर्ण जयंती समारोह के समापन अवसर पर विगत तीन दिनों में हुई चर्चाओं के आधार पर तय किया गया कि परिवार, समाज, गांव-शहर और देश में शांति व न्याय की स्थापना के लिए हर घर गांधी और हर घर संविधान पहुंचाने के लिए व्यापक अभियान चलाया जाएगा। उक्त उद्गार प्रख्यात गांधीवादी और सर्वोदयी नेता राजगोपाल पीवी ने समापन समारोह में कही।

प्रख्यात गांधीवादी और सर्वोदयी नेता राजगोपाल पीवी ने कहा कि समाज परिवर्तन में युवाओं की महती भूमिका है, न्याय और शांति के लिए नवजवानों को आगे आकर भाई जी के स्वप्न एकता, अखण्डता, भाई-चारा, साम्प्रदायिक सद्भावना पर काम की जरूरत है। समापन समारोह के पूर्व सत्र में विभिन्न प्रांतो से आये प्रतिनिधियों ने भविष्य के कार्यों की रूपरेखा को प्रस्तुत किया।

प्रख्यात सर्वोदयी नेता राम धीरज के द्वारा समारोह में 10 प्रस्तावों को रखा जिन्हें सर्वसम्मति से पारित किया गया। प्रस्तावों में प्राकृतिक संसाधनों जल, जंगल और जमीन पर स्थानीय समुदाय का अधिकार और उसका उपयोग न कि

दोहन, स्वावलम्बन के लिए सामूहिक उपक्रमों कुटीर उद्योग धंधो को बढ़ावा, स्थानीय स्तर पर विवादों का मेल-मिलाप से हल करना, गांव की कमाई गांव में ही रहे और ग्राम कोष की स्थापना का प्रयास, हर घर गांधी-हर घर संविधान की पहुंच, नशा मुक्त भारत अभियान, प्रकृति व पर्यावरण की हर हाल में रक्षा, मन व समाज की शांति के लिए सर्वधर्म प्रार्थना आदि का उल्लेख किया गया।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के राजनैतिक सलाहकार और प्रख्यात स्तम्भकार सुधीन्द्र कुलकर्णी ने आजादी के अमृत महोत्सव पर आगामी 25 वर्षों के लिए जनता की भागीदारी के साथ गांधी को केन्द्र में रखकर एक महाअभियान चलाया जाना चाहिए। अभियान के तहत गांधीवादीयों को समाजवादियों, अम्बेडकरवादियों, माक्सवादियों व संघीयों और सभी राजनैतिक पार्टियों से संवाद का सिलसिला प्रारंभ करना चाहिए ताकि सर्वसम्मति अपना राष्ट्र उन्नति कर सके। प्रख्यात लेखक और पत्रकार जगदीश शुक्ला के द्वारा लिखित 'गांधीवाद के मंत्र से बदली चम्बल की तकदीर' पुस्तक का विमोचन सुधीन्द्र कुलकर्णी द्वारा किया गया।

समापन समारोह के अवसर पर जौरा के अनुविभागीय अधिकारी विनोद सिंह ने कहा कि सभी नवजवान यह संकल्प ले कि गांधी और समारोह की चर्चाओं को अपने गांव-शहर और परिवार में लेकर जाएंगे। पुलिस अनुविभागीय अधिकारी मानवेन्द्र सिंह ने कहा कि गांधी आज बहुत ही प्रासंगिक हैं। एकता परिषद मध्यप्रदेश के प्रदेश संयोजक डोंगर शर्मा ने लोगों को एकजुट कर उनकी समस्याओं के समाधान के लिए अहिंसक आंदोलन के लिए अपील की। पूर्व विधायक महेश मिश्रा ने युवाओं को देश की हालात बदलने के लिए अपील की। उन्होंने कहा कि आठ वर्ष पहले देश में गरीब परिवारों की संख्या 32 करोड़ से बढ़कर 81 करोड़ होना आश्चर्य किंतु सत्य है, इस तरह के प्रकल्प की आवश्यकता पर बल दिया जिससे गरीबी को समाप्त किया जा सके। आयोजन समिति की ओर से कैलाश मित्तल ने सभी आगन्तुकों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

समारोह के समापन सत्र में अलग-अलग राज्यों से आये प्रतिभागियों को महात्मा गांधी सेवा आश्रम के सचिव रनसिंह परमार ने अंगवस्त्रम् देकर सम्मानित किया और उनकी हौसला आफजाई की।

एकता परिषद के राष्ट्रीय संयोजक प्रदीप प्रियदर्शी व श्रद्धा कश्यप, महासचिव रमेश शर्मा, अनिल गुप्ता, सीताराम सोनवानी, मुरली भाई, रामस्वरूप, ज्ञानाधार शास्त्री, प्रशांत भाई, अरुण, रविन्द्र सक्सेना, रीया, दीपक अग्रवाल, सामाजिक कार्यकर्ता और पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष राकेश सिंह यादव इत्यादि को उनके समूह के साथ और प्रख्यात गांधीवादी लोक गायिक झारखण्ड की मेघा डाल्टन को राजगोपाल पीवी, जिलकार हैरिस व अनुविभागीय अधिकारी द्वारा सम्मानित किया गया। समारोह की व्यवस्था से जुड़े अलग-अलग विभागों पंजीयन, भोजन, आवास, पानी, स्वच्छता, सुरक्षा, दस्तावेजीकरण के प्रतिनिधियों को भी प्रफुल्ल श्रीवास्तव की अगुवाई मे सम्मानित किया गया। जिसमें उदयभान सिंह, सुनिल शर्मा, लक्ष्मीनारायण, संतोष सिंह, कुलदीप तिवारी, सुनिल, डोंगर शर्मा, संजय जादौन, देवा, श्याम, सागर, आनंद सोनी और रा-रूट्स प्रोडक्शन के युवा इत्यादि लोग शामिल थे।